अपनों की बात...

नीता बिष्ट जौनपुरी

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

अपनों की बात...

संकलक

नीता बिष्ट जौनपुरी

साहित्य संगम बुक्स

अपनों की बात...

- प्रकाशन : साहित्य संगम बुक्स।
- संकलक : नीता बिष्ट जौनपुरी।
- रूप सज्जा : अमित पाठक शाकद्वीपी।
- मुद्रण : नई दिल्ली।
- संस्करण : प्रथम, 2024।
- ISBN : 978-81-973263-5-6।

- © सर्वाधिकार सुरक्षित।

ISBN: 978-8-19732-635-6

9 788197 326356

मूल्य : ₹५००/-

साहित्य संगम बुक्स

आभार

इस पुस्तक के प्रकाशन के पथ पर हमें अनेक लोगों का साथ और आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। सबसे पहले हम उन सभी लेखकों, शोधकर्ताओं और साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनकी प्रेरणा और योगदान से यह पुस्तक संभव हो सकी।

हम अपने परिवार और मित्रों का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिनकी निरंतर प्रेरणा, सहानुभूति और सहयोग ने हमें लेखन के इस कार्य में संबल प्रदान किया। विशेष रूप से हम अपने पाठकों के प्रति आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने हमारे विचारों को अपना समर्थन दिया और हमें अपनी प्रतिक्रियाओं से मार्गदर्शन दिया।

हमारे मार्गदर्शक और गुरुजनों का भी हृदय से धन्यवाद जिन्होंने अपने अमूल्य ज्ञान और दृष्टिकोण से हमें मार्गदर्शन किया और हमारी लेखनी को निखारा। उनके आशीर्वाद से ही हम इस कार्य को सफलता पूर्वक संपन्न कर पाए।

इस पुस्तक के निर्माण में शामिल सभी तकनीकी और रचनात्मक टीम के सदस्यों को भी हम धन्यवाद देते हैं, जिनकी मेहनत और समर्पण से यह पुस्तक आकार ले पाई।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक पाठकों के जीवन में एक सकारात्मक प्रभाव छोड़ेगी और "अपनों की बात" से जुड़े विचारों से समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता का संचार होगा।

हार्दिक आभार !

नीता बिष्ट जौनपुरी

(संकलक)

अस्वीकरण

यह संकलन विभिन्न लेखकों और कवियों की कल्पनाओं, अनुभवों, और विचारों का संग्रह है। इसमें व्यक्त की गई राय और भावनाएँ पूरी तरह से लेखकों की अपनी हैं और आवश्यक नहीं है कि वे संपादक, प्रकाशक, या अन्य संबंधित व्यक्तियों के दृष्टिकोण या मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हों।

इस पुस्तक में शामिल रचनाएँ साहित्यिक और रचनात्मक उद्देश्य से प्रस्तुत की गई हैं। यदि कोई सामग्री किसी पाठक को असुविधाजनक लगे या उनके विचारों से मेल न खाए, तो यह संयोगवश है और इसका उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह को साहित्यिक दृष्टि से देखें और इसे खुले मन से पढ़ें।

साहित्य संगम बुक्स

प्रतिलिप्याधिकार

यह काव्य संकलन विभिन्न कवियों की मौलिक रचनाओं का संग्रह है, जो उनकी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। संग्रह में शामिल सभी कविताएँ और सामग्रियों पर संबंधित कवियों और प्रकाशक का पूर्ण बौद्धिक अधिकार सुरक्षित है। इनका किसी भी रूप में पुनरुत्पादन, प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग लेखकों और प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पूर्णतः निषिद्ध है। इस संग्रह का संकलन, संपादन, और प्रकाशन का कॉपीराइट साहित्य संगम बुक्स के पास सुरक्षित है। किसी भी प्रकार का अनाधिकारिक उपयोग भारतीय कॉपीराइट अधिनियम, 1957 और अन्य प्रासंगिक कानूनों का उल्लंघन माना जाएगा, जिसके लिए कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह का उपयोग केवल निजी अध्ययन और साहित्यिक उद्देश्य से करें। यदि किसी भी सामग्री को उद्धृत या संदर्भित करना हो, तो लेखक और पुस्तक को उचित श्रेय देना अनिवार्य है। इस पुस्तक की कोई भी सामग्री व्यक्तिगत अध्ययन, शोध या समीक्षा के उद्देश्य से सीमित उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त कर सकती है, लेकिन व्यावसायिक उपयोग या वितरण के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक है।

इस पुस्तक का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। किसी भी सामग्री के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त करने के लिए कृपया नीचे दिए गए संपर्क विवरण पर संपर्क करें।

संपर्क:

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी, फुसरो, बोकारो

झारखंड – 825102

वेबसाईट : www.sahityasangambooks.in

ईमेल : sahityasangambooks2@gmail.com

जुड़ने के लिए स्कैन करें

भारत सरकार
Government of India
Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises

UDYAM REGISTRATION CERTIFICATE

- **Udyam Reg. No. : UDYAM-JH-01-0024515**
- **Date of Udyam Reg. : 03/06/2023**
- **Name of Enterprise : SAHITYA SANGAM**
- **Social Category of Enterpreneur : General**
- **Type of Enterprise : Micro (During FY 2021-22 & Based on FY 2022-23)**

NAME OF UNIT(S)
Sahitya Sangam Books
(Owned by : Amit Pathak)

OFFICAL ADDRESS OF ENTERPRISE
Flat/Door/Block No. 1004
Name of Premises/ Building : Staff Quarter Dhori
Village/Town : Phusro Block : Bermo
Road/Street/Lane : Near Dhori Pani Tanki City : Bokaro
State : JHARKHAND District : BOKARO , Pin : 825102
Mobile : 8935857296 Email : sahityasangambooks@gmail.com
Website : www.sahityasangambooks.in

भारत सरकार
Government of India
Goods and Service Tax

REGISTRATION CERTIFICATE

- **Registration Number : 20CGKPP7865A1ZF**
- **Legal Name : Amit Pathak**
- **Trade Name, if any : Sahitya Sangam Books**
- **Jurisdictional Office : Tenughat**
- **Date of issue of Certificate : 11/11/2023**

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of application granted on 11/11/2023 by the jurisdictional authority.

अनुक्रमणिका

सहयोगी रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. सुश्री नीता बिष्ट जौनपुरी	7
2. श्रीमती प्रतिभा जोशी	10
3. श्रीमती पूजा गुप्ता	13
4. डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे	16
5. सुश्री रिंकी रंजिनी	19
6. श्री अनुज कुमार	22
7. श्री अनिल कुमार राज़	25
8. डॉ. बलवंत सिंह राणा	29
9. श्री मुन्ना राम मेघवाल	32
10. श्री सुरेन्द्र शुक्ला	35
11. श्री विनोद मिश्र सुरमणि	38
12. डॉ. चन्द्रशेखर सिंह	41
13. श्रीमती अल्पना प्रियदर्शी	44
14. श्री नंदलाल मणि त्रिपाठी	47
15. श्री बिजेंद्र अहीर	50
16. श्रीमती हेमलता साहूकार	53
17. श्री हरमन कुमार बघेल	56
18. श्री सत्यजीत पुरकायस्थ	59
19. श्री देवानंद मिश्र	62
20. श्रीमती सरिता गुप्ता	65
21. श्री नीरज सिंह	68
22. श्री सुरेन्द्र कुमार रात्रे	71
23. श्री प्रवीण कुमार	74
24. श्री उमा कांत सहाय	77
25. डॉ नोशाब सुहैल	80
26. श्रीमती मंजु बरनवाल	83
27. श्री राकेश राज	86
28. श्री मनोज मंजुल	89
29. श्री तुलसी राम राजस्थानी	92
30. सुश्री आरती निगम	95
31. श्री सुबोध कुमार कुलश्रेष्ठ	98
32. श्रीमती सुमन गर्ग	101
33. श्री आनंद श्रीवास्तव	104
34. डॉ. लाल सिंह किरार	107
35. सुश्री सपना शर्मा	110
36. श्रीमती नीना श्रीवास्तव	113
37. श्री रामप्रकाश गहोई	116
38. श्री राम सागर कश्यप	119
39. श्री भागीरथ सिन्हा	122

- **अपनों की बात ...**

- **अपनों की बात ...**

सुश्री नीता बिष्ट जौनपुरी

गढ़वाल, उत्तराखण्ड

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. कौर सिंह बिष्ट।
- माता जी का नाम : श्रीमती सोबन देई।
- अभिरुचि : लेखन एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिभाग।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी)।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं समाज सेविका।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- बेटी।
- राम मंदिर।
- माँ।
- रक्षा बंधन का त्यौहार।
- आया है सावन का महीना।

प्राप्त सम्मान

- शब्द शिल्पी सम्मान।
- डॉ एस. राधाकृष्णन शिक्षक सम्मान।
- मैं भी कलमकार मंच द्वारा प्रशस्ति पत्रक।
- साहित्य संगम बुक्स प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त।
- नव ज्योति जन कल्याण समिति सम्मान पत्र

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

मेरे अपनों की बात

किसी के लिए काम जरूरी है,
तो, किसी के लिए अपना नाम ।।

किसी के लिए परिवार जरूरी है,
तो, किसी को समाज ।।

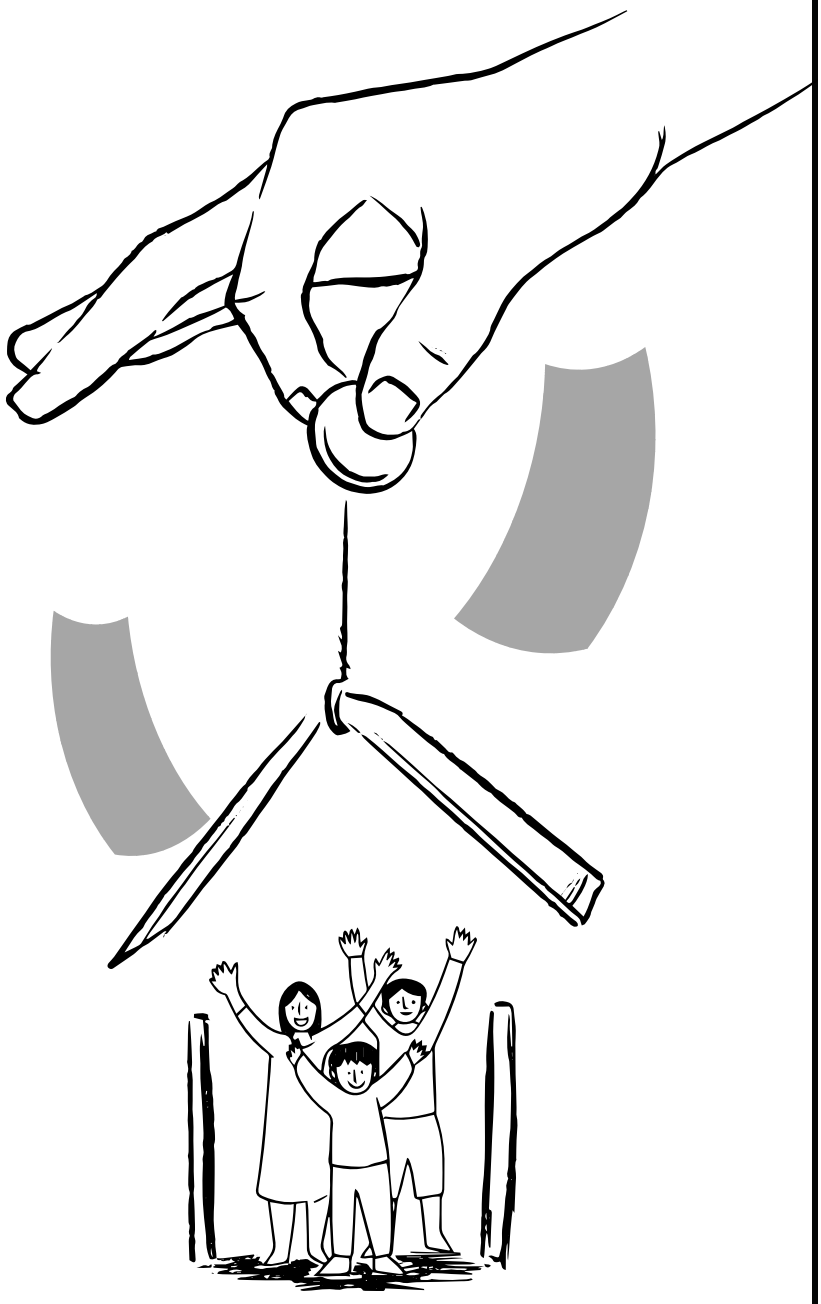

कर गई गलती,
सबको समझ के खास ।।

बहुत जलील हो गई,
अब तो, बात को जान ।।

मेरी अच्छाई ने घटा दिया,
आज मेरा ही मान ।।

सोचते सोचते,
बीत गई सारी रात ।।

छुट गया है,
अब सबका साथ ।।

थामे तो थामे,
अब किसका हाथ ।।

ये थी मेरे
अपनो की बात ।।

– नीता बिष्ट जौनपुरी

दौलत का घमंड

ऐ इंसान तु इंसानियत ना भूल ,
दौलत के घमंड में ना हो इतना चूर।।

ये दौलत है चार दिन की चांदनी ,
जब तक है जान सिर्फ खुशियां है बांटनी।।

चला जाना है एक दिन यह सब छोड़कर,
धरी की धरी रह जाएगी तेरी शान और शौकत।।

क्यों दिखता है यह दौलत की गर्मी,
चली जानी है एक दिन तेरी भी अर्थी।।

वही लकड़ी वही कफन,
एक ही मिट्टी में होना है सबको दफन।।

क्यों होना दौलत में इतना अंधा,
तेरे अपने ही आएंगे तुझे देने कंधा।।

अरे नासमझ मत कर इतना भी घमंड
इंसान आता भी और जाता भी है सिर्फ नग्न।।

– नीता बिष्ट जौनपुरी

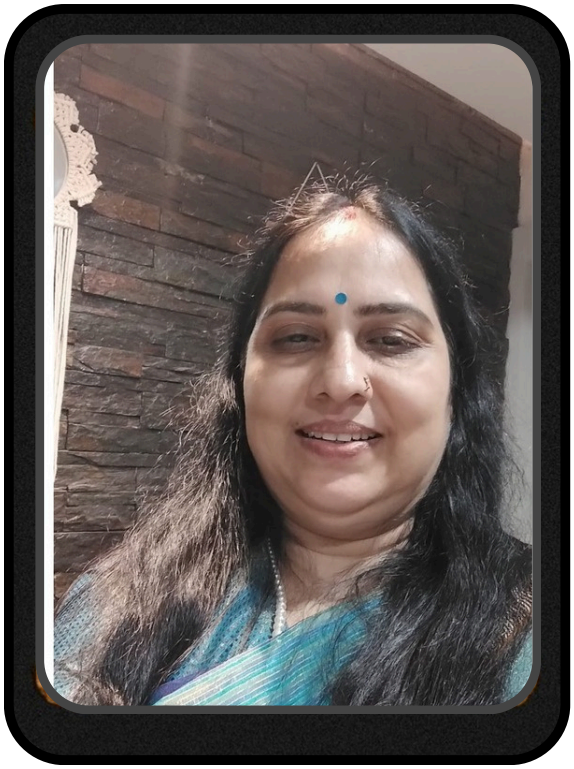

श्रीमती प्रतिभा जोशी

इन्दौर, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रामगोपाल जी शर्मा।
- माता जी का नाम : श्रीमती शारदा देवी ।
- पति का नाम : श्री अमित कुमार जोशी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी) , स्नातक (वाणिज्य)।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- सनातन संस्कृति (लेख)
- समझौता जिंदगी का (कहानी संग्रह)
- स्त्री और रंग (कविता)
- मंत्र जाप ? (लेख)
- मां -बेटी (कविता)

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

मैं लिखती हूँ

मैं लिखती हूँ, इसलिए कि तुम गाओ,
मेरी गीतों के साथ आवाज तो मिलाओ।

मेरे गीत तुम्हारे दिल की आहों से सने हैं ,
इन गीतों में अपनी खोई हुई मोहब्बत पाओ।

गरीब, बेगैरत, बेइज्जत, बेशऊर हूँ मैं ,
मगर मेरी मेहनतकशी पर नजर तो उठाओ।

जला डालो यह संगदिल दुनिया सारी,
मगर खुदारा मेरे नगामात तो न जलाओ।

मेरे जज्बात मुझसे छीनो तो गम नहीं,
मेरे एहसास को यूं अश्कों से न बहाओ।

सोचो कभी दो-चार घड़ी तन्हाई में ,
मेरे सीने से गुजरी हुई यादों को गले लगाओ।

मेरी कलम जो खामोश और बेजुबान है ,
उसे अपनी मोहब्बत का लिबास पहनाओ।

यह लिखेगी क्योंकि तेरी खातिर लिखना है,
यह न रुकेगी इसे वादों से ना बहलाओ।

रोक सकती नहीं वक्त की तेज धारें ,
बस एक बार मेरे ख्यालों में तुम आ जाओ।

मैं लिखती ही रहूंगी जब तक दम है,
मेरा वादा है यह, इसे शौक से आजमाओ ।

– प्रतिभा जोशी

मेरी गुड़िया

वो एक नर्म सी, नाजुक सी गुड़िया,
गुलों सी नादां, कमसिन सी गुड़िया।

खयालों की वादी में धीमे से आकर,
बड़े शौक से बनती दुल्हन सी गुड़िया।
गई है अभी-अभी तो यहाँ से.....

कहकहों में लिपटी उसकी हर अदा,
फरिश्ते भी जिस पर हो जाएँ फिदा।
जिसके आंगन में हो हूरें रक्सां,
बहारें आऐं उसे करने को सजदा।।

गजरा है बालों में चमेली का उसके
आंखों में चमकते हैं कितने सितारे
गिरी हो जैसे कहीं बर्क आसमां से
उतर के आई हो जैसे वो कहकशां से

उसकी मांग में टंके हो जैसे सितारे
माथे पर जगमगाते अर्क के धारे
चुरा लाई हूं कोई नाजुकी गुलिस्तां से.....

– प्रतिभा जोशी

- कठिन शब्दों के अर्थ

- हूरें रक्सां -- वह परी जिसकी रक्षा ईश्वर हमेशा करता रहे।
- कहकशां -- आकाश में तारों का ऐसा समूह जो ढूंढने
- बादल जैसा दिखाई देता है।
- अर्क -- झोंका हवा का ।
- बर्क -- आकाशीय बिजली ।

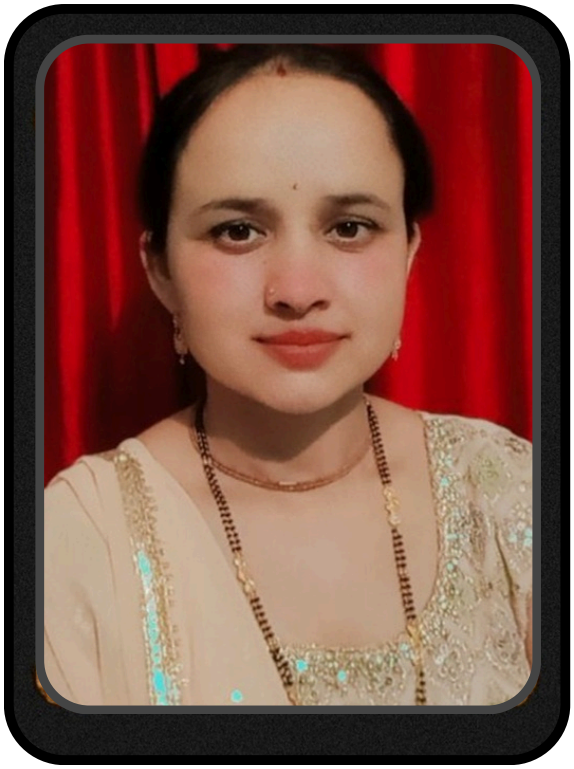

श्रीमती पूजा गुप्ता

शिमला, हिमाचल प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री जितेन्द्र कुमार।
- माता जी का नाम : श्रीमती पार्वती देवी।
- पति का नाम : श्री हरीश गुप्ता।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी एवं सामाजिक अध्ययन), पीजीडीसीए, डिप्लोमा इन मेकअप आर्ट। ।
- साहित्यिक अनुभव : अपने कॉलेज की पत्रिका में संपादन कार्य किया।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

स्वर्ण पल

कोई तुम्हारी जिंदगी के
स्वर्ण पलों को छीनकर
एक दिन बड़े गर्व से कहेगा
कि तुमने किया क्या?
वक्त की गर्म रेत पर चलकर
जब तुम सुस्ताने बैठोगे
कुछ देर कहीं ठंडी छांव में
तो वह छांव तुमसे पूछेगी
कि तुम चले ही कहां?
तुम्हारा ही आईना एक दिन
तुम्हारी झुर्रीयों का मोल मांगेगा
जब तक तुम्हारी जरूरत होगी
तुम्हें उपदेश देने वाला नहीं होगा
जरूरत खत्म होते ही कोई
बड़े शान से कहेगा कि-
तुमने आखिर किया क्या?

– पूजा गुप्ता

बेग़ैरत

बड़े बेग़ैरत हो गए थे हम,
हदों को भी तोड़ दिया था।
भुला दिया था अपना अक्स,
ठीक से जीना छोड़ दिया था।
बदलने लगे है अब हम शायद
संवार रहे है अपना अंतर्मन
सख़्त सांचे में ढल रहे है ऐसे
नई राह पर चल रही हो जैसे
नारियल से सीखा है ये नया रूप
अंतर्मन कोमल कठोर स्वरूप
टूटते ही ख़्वाब हकीकत को देखा
बड़ी गहरी नींद से अब जाग रहे हैं
पुराना रूप अब मयस्सर न होगा
किसी वार का हम पर असर न होगा
कभी पर्वत थे अब पानी बन गए हैं
एक अनकही सी कहानी बन गए है।

– पूजा गुप्ता

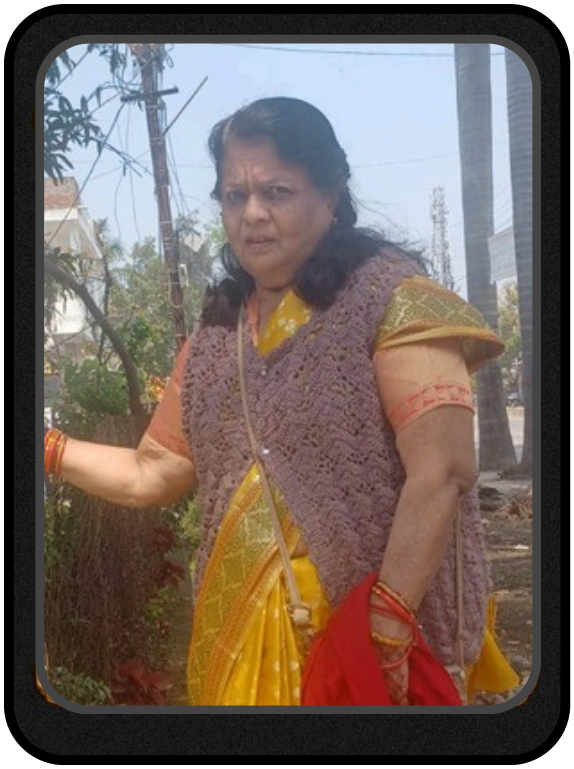

डॉ. राज लक्ष्मी शिवहरे

जबलपुर, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. शशि कुमार गुप्ता।
- माता जी का नाम : स्व. चंद्रकला गुप्ता।
- पति का नाम : डॉ आर एल शिवहरे।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक एवं विद्या वाचस्पति।
- पदनाम : शिक्षिका, लेखिका एवं कवयित्री।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- बाल साहित्य में चिंपीजी की दुल्हनिया और रहस्यमई गुफा।
- धार्मिक कृतियाँ - रामायण दर्शिका, गीता दिव्य दर्शन। श्रीमद्भागवत प्रकाश के तीन भाग।
- उपन्यास- अधुरा मन, विषपाई, साधना, समाधि, गाथा आदि।

प्राप्त सम्मान

- हिंदी लेखिका संघ भोपाल से रहस्यमई गुफा सम्मानित।
- हिंदी साहित्य परिषद जयपुर द्वारा साधना उपन्यास सम्मानित ।
- दूसरा कैनवास और उपन्यास गाथा कादम्बनी संस्था जबलपुर द्वारा सम्मानित।
- सर्व लेखन के लिए कादम्बरी संस्था द्वारा सम्मानित। सौ से अधिक सम्मान प्राप्त।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अनमोल जीवन

कहते हैं चौरासी योनी
के बाद मिलता है
मानव का अनमोल जीवन।
वरदान है ईश्वर का
मत नष्ट करो।
हम पशु नहीं मानव हैं
मानवोचित व्यवहार करो।
कुछ ज्यादा है पास तुम्हारे
तो उसको दान करो।
शिक्षा, धन, धान्य देकर
दूसरों को उपकृत करो।
नारी हिंसा पाप है
उसका तुम बहिष्कार करो।
प्राणी मानव जीवन केवल
खाने खेलने का साधन नहीं
तपस्या से इस जीवन के
उद्श्य को सार्थक करो।
वासना में लिप्त रहकर
मत जीवन बर्बाद करो।
पोनी जोड़ तिजोरी भरी
साथ कुछ न जाए।
अंत समय फिर हाथ
कुछ न आये।

– डॉ राज लक्ष्मी शिवहरे

बुज़ुर्ग

बचपन, जवानी और बुढ़ापा
बचपन जो खेल खेल में बीता।
जवानी पढ़ने, जिम्मेदारी
निभाने में बीती।
आया बुढ़ापा तो अंखियां
कमजोर हुई।
मुंह से दांत हुए नदारत।
हाथ में लठिया।
बस यही है जीवन की
कहानी।
न तेरी न मेरी सबकी
यहीं रवानी।
फिर डरना कैसा बस
हिम्मत रखना।
सुनी अनसुनी करना।
सबकुछ है सहना।
जीवन शेष जितना
शांत होकर सब सहना।
पैसे अपने साथ रखना।
जो मन में आए
वहीं खाना।
चार कदम रोज चलना।
खेल खेल में बीतेगा बुढ़ापा।
शानदार जीवन जीना।
बस मुझे इतना ही कहना।

– डॉ राज लक्ष्मी शिवहरे

सुश्री रिंकी रंजनी

मसूरी, उत्तराखण्ड

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. चनेश्वर रविदास।
- माता जी का नाम : श्रीमती ज्ञान्ती देवी।
- अभिरुचि : लेखन एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिभाग।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (समाज शास्त्र)।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री ।
- साहित्यिक अनुभव : विगत दो वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- तुलना,
- पवित्र गंगा कहलाती हूं,
- शिव का सावन,
- डोर स्नेह की,
- मधुर वाणी, नारी एक गुलाब,
- किसान, पहाड़ों की कहानी, शिक्षक।

प्राप्त सम्मान

- कलम की ताक़त समूह
- मां भारती काव्य कुंज ,
- हिन्दी साहित्य मंच,
- श्री राम साहित्य सेवा संस्थान द्वारा सम्मान पत्र हासिल हुआ।
- तथा ओनलाइन साहित्यिक समूह में दैनिक, मासिक प्रतियोगिता गतिमान है

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अपनों का साथ

पक्के मकानों में अक़्सर,
कच्चे रिश्ते उलझ जाते हैं।
अपने होते हैं सदा पराए,
पराए होते हैं सदा अपनें,
यह जीवन का सत्य नहीं,
इस सोच से घर बिखर जाते हैं।

माना भाग दौड़ की ज़िन्दगी में,
समय का अधिक अभाव है।
अपनों से जीवन ही है तो,
अपनों के अनमोल रिश्तों में,
विश्वास का कैसा नाप तोल,
कैसा प्यार का मोल भाव है।

एक अकेली मधुमक्खी भी,
फलों से पराग बंटोरकर,
छतों का नहीं करती है निर्माण।
जीवन के सफ़र में अगर,
अपनों का रहे जो साथ,
तकलीफों से कोई कैसे मान लें हार।

– रिंकी रंजिनी

अपने : जीवन का आधार

कहने वाला हर कोई है,
समझनें वालों की जरूरत है।
कितने ही करो तुम जतन,
तुम कहो, वो नहीं बोलेगा,
इंसान का जीवन तो एक,
माटी की सुन्दर मूरत है।

दिन चढ़ते इंसान घर से निकले,
मिले दोस्त और मिले दुश्मन,
यूं तो मिलें क ई जाने पहचाने,
अपना कहने को कोई नही मिलता है,
अपनों के लिए इंसान घर लौटता है।

पिता से हमें मिले सहारा,
माँ कि ममता और दुलार,
भाई बहन से खुशियां मिलें,
अलग है अपनों की बात,
यही तो होता है पारिवार,
यही तो है, जीवन का आधार।

– रिंकी रंजिनी

श्री अनुज कुमार

गया, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री द्वारा साव।
- माता जी का नाम : श्रीमती शारदा देवी।
- अभिरुचि : साहित्यिक लेखन ।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (सिविल अभियांत्रिकी)।
- पदनाम : लेखक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत एक वर्ष से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

कर्तव्य

मन में आए विकारों को
मन से दूर भगाना होगा,
राह में आए मुश्किलों को
तील तील कर जलाना होगा,
बहुत चला लिए अपना निज जीवन,
अब औरों के जीवन के खातिर,
हमें अपना कलम चलाना होगा।

मन में उम्मीद का भोर सजाकर,
अंतस्थल में ख्वाब की ज्योत सजाकर,
हिम्मत को हिम्मत से मिलाकर,
भटके को उनका राह दिखा कर ,
इस परिवेश को
अब एक आस दिलाना होगा
औरों के सपनों के खातिर ,
हमें अपना कलम चलाना होगा।

सागर को उसके गहराई से उधेड़ कर,
इस विसंकृत हवाओं का रुख मोड़कर,
इन कुरीतियों के जंजीर को तोड़ कर,
पापियों का गर्दन को मरोड़कर,
सुखद सुनहरे सपनों को
अब धरती पर लाना होगा,
पर जन के हित के खातिर,
अब हमे अपना कलम चलाना होगा।

विद्यार्थी, कृषक और
आम जन के लिए,
निर्धन, हरिजन और
भूखे तन के लिए ,
लोकतंत्र और लड़कियों के
जीवन के लिए ,
कुंठित तन, हारे मन और
परिवर्तन के लिए ,
उसके कुर्सियों को तोड़
अब गिराना होगा ,
उसके बहरे कानों को
आज सच सुनाना होगा ,

वंचितों को उनका हक दिलाना होगा ,
हम कवियों को अपना
कर्तव्य निभाना होगा,
राष्ट निर्माण के पथ पर खुद को
सूर्य के भांति जलाना होगा,
क्रांति की स्याही भर कर ,
हमे अपना कलम चलाना होगा,
अब औरों के जीवन के खातिर,
पग पग कदम बढ़ाना होगा।

– अनुज कुमार

वो दर, वो दीवार छोड़ कर आया हूँ

वो दर, वो दीवार छोड़ कर आया हूँ
शहर कितनों का दिल तोड़ कर आया हूँ।

अक्सर गोदी में भर लेती थी जो
उस आंगन को उदास छोड़ कर आया हूँ।

स्कूल, मंदिर और वो जामुन का पेड़ बुलाते रहे
अनदेखा कर सबको तन्हा छोड़ कर आया हूँ।

पसीने बहा कर, हल चलकर जो उम्रभर कमाया
शहर पढ़ने बाबू की कमाई जोड़कर लाया हूँ।

मेरे शहर जाने की खबर ने मां को घायल किया
उस ग़म को एक उम्मीद में मोड़ कर आया हूँ।

ख्याब,अंधियारे और समय की जंग में ,
तप,त्याग व शालीनता को ,खुद से जोड़ कर आया हूँ।

हम छोटे लोग के छोटे हाथ ,कुछ नहीं कर सकते है
लोगों के इस भ्रम को आज तोड़कर आया हूँ।

– अनुज कुमार

श्री अनिल कुमार राज़

बंगलुरु, कर्नाटक

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री अलख राम।
- माता जी का नाम : श्रीमती लक्ष्मी देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (वाणिज्य)।
- पदनाम : लेखक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत दो दशकों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- प्रीत की डोर,
- मां का आंचल,
- सांवरे की बंसी,
- कई रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित

प्राप्त सम्मान

- मैं भी कलमकार मंच द्वारा प्रशस्ति पत्रक।
- साहित्य संगम बुक्स प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

बातें

तुम करती हो बातें, कितने कम शब्दों में,
हाँ और ना, बस इन्हीं दो लफ़्ज़ों में।
क्यों तेरे शब्दकोश में, और शब्द नहीं ?
अगर हैं, तो क्यों मेरे लिए उपलब्ध नहीं ?
तुम इतनी ज्यादा, मितभाषी क्यों हो,
मन खोलो ना अपना, कुछ तो कहो।
कुछ तो कहो तुम, अपने बारे में,
क्या है, तेरे शहर के, गली चौबारे में।
बताओ तो अपनी, पसंद नापसंद को,
पसंद करती हो मोगरा, या गुलाब के गंध को।
तुझे लाल रंग भाता है, या भाता है नीला,
या पसंद है इंद्रधनुष सा, रहना रंगीला।
अपने बारे में मुझे, कुछ तो बता दे,
तुझे जान सकूँ, इतना तो पता दे।
हो चुकी हैं हमारी, अनगिनत मुलाकातें,
अजनबी नहीं हम, जो हों अजनबी सी बातें।
हां और ना की मुलाकातें, अब अच्छी नहीं,
वक्त कम है, पर कम बातें अब अच्छी नहीं।
तो अगली बार शब्दों के, दायरे से निकल आना,
खुल के कहना, खुलकर अपनी बात सुनाना।

– अनिल कुमार राज़

तुम मेरी कविता

ये जो बड़े हीं गौर से, तुम सुन रही हो,

कभी हां, तो कभी ना में, सर धुन रही हो।

कभी संजीदा हो जाती, कभी मुस्कुराती हो,

कभी शरमा के दांतो तले, उंगली दबाती हो।

ज़ुल्फ़ों से ख़ेलती हो, कभी कंगना घुमाती हो,

तानती हो भौंए, कभी नज़रें झुकाती हो।

बांधती हो तुम अपनी, बेताब धड़कनें,

होठों को भींच, आँखें मूंद, करती हो जो बने।

कभी कहती हो वाह !, कभी आह भरती हो,

और सुनाओ कुछ और सुनाओ, की चाह करती हो।

कहती हो अच्छे होते हैं, मेरी कविताओं के भाव,

ठंढक मिलती है दिल को, भर जाते सुन के घाव।

कहती हो कि लिखता हूँ मैं, कविताएं बड़ी अच्छी,

पर सुनो, बताता हूँ मैं तुम्हें, बात एक बिलकुल सच्ची।

कि मैंने आज तक, लिखी नहीं एक भी कविता,

ये रस, छंद, अलंकार क्या है, मुझे नहीं पता।

मैं नहीं जानता क्या होता है, तुक से तुक मिलाना,

शब्दों की मधुरता या फिर, लय में लिखा जाना।

मैं तो बस लिखता हूँ , तुम्हारी कही बातें,

मैं तो बस लिखता हूँ , तुमसे हुई मुलाकातें।

मैं तो बस लिखता हूँ , तुम्हारी सोच को विचार को,

मैं तो बस लिखता हूँ , तुम्हारे हृदय के प्यार को।

मैं तो बस लिखता हूँ , तेरी मुस्कान को हंसी को,

मैं तो बस लिखता हूँ , तेरी हरपल की खुशी को।

मैं तो बस लिखता हूँ , तेरी हर परेशानी को,

मैं तो बस लिखता हूँ , तेरी हर आसानी को।

मैं तो बस लिखता हूँ , तेरे आंसुओं को ज़ख्मों को,

तेरी हर सच्ची झूठी, वादों को कसमों को।

मैं तो तेरे होठों को, तेरी आंखों को लिखता हूँ ,

तेरी लहराती चूनर, तेरी बाहों को लिखता हूँ ।

मैं तो लिखता हूँ, तेरी पायल को गजरे को,

मैं तो लिखता हूँ, तेरे कंगन, तेरे कजरे को।

मैं तो लिखता हूँ, तेरी सुकून भरी निंदिया को,

मैं तो लिखता हूँ, माथे की काली बिंदिया को।

मैं तो तेरी जुल्फ़ों, तेरे पावों को लिखता हूँ ,

तेरी अधूरी पूरी रह गई, चाहों को लिखता हूँ ।

मैं तो बस तुझे सुबह, शाम को लिखता हूँ ,

कविता नहीं, मैं बस तेरे नाम को लिखता हूँ ।

– अनिल कुमार राज़

डॉ. बलवंत सिंह राणा

सोलन, हिमाचल प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. देव सिंह राणा।
- माता जी का नाम : श्रीमती रामप्यारी देवी।
- अभिरुचि : लेखन एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिभाग।
- शैक्षणिक योग्यता : डॉक्टर इन लिटरेचर।
- पदनाम : मैनेजर , पूर्व शिक्षक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- मातृत्व।
- उठती लहरें।
- बहती सोच।
- भाव विभोर।
- गुरुचरणाम्बुज।

प्राप्त सम्मान

- इंकलाब प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र।
- नम्या एवं नीलम प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र।
- मैं भी कलमकार मंच द्वारा प्रशस्ति पत्रक।
- साहित्य संगम बुक्स प्रकाशन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

मेरे अपने

जन्म से पहले अनजान थे,
इस धरा पर आते बंधन हज़ारों मिले।
माँ ने जन्म दिया ,
पिता ने पालन पोषण किया,
भाई, बहन और ना जाने कितने रिश्ते,
मुझको अपने से जोड़ते रहे,
मुझको हर पल एक नई पहचान देते गए।
अजब गजब होते है ये रिश्ते,
जीवन को अन्नत इच्छाओ में लपेटकर,
जन्म को सार्थक करते है।
मेरे अपने कितने भी पराए हो,
अंत तक इस ह्रदय में रहते हैं।
जीवन को सुकून देते है,
रिश्ता जुड़ता अगर तो कोई कर्म है।
वरना इस जीवन में पल भर का भ्रम है,
इसीलिए मेरे अपने ही मेरा कर्म है।

– बलवंत सिंह राणा

दुनिया का दर्द

कौन कितना कहां पर दर्द झेल रहा,
किसको किसी से क्या लेना,
सब अपना रोना रो रहे यहाँ पर,
जीवन को कोई जी रहा कोई कोस रहा।
सब अपना दर्द बयां करते करते जहाँ में,
दुनिया के दर्द को भूल गए,
स्वार्थ इतना भरा इस जहाँ में,
सब सबकुछ समेटते समेटते अकेले हो गए।
अपना दर्द बयां करते करते जहाँ में,
दुनियां के दर्द को अनदेखा कर रहे,
कौन हो मानव तुम, इस कदर जहाँ में आए,
अमिट इच्छाएं पोटली में बांधकर जहाँ में,
पल पल उलझते नजर आए।
कौन कितना दर्द इस जीवन में सह रहा,
किसी को किसी की नहीं ख़बर,
सब बस अपने को दुःखी कह रहे,
अपने दर्द संग ख़ुशी छिपा रहे,
दुनिया को दर्द देकर पल पल हंस रहे।

– बलवंत सिंह राणा

श्री मुन्ना राम मेघवाल

कोलिया, डीडवाना, राजस्थान

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रामदेव भाटी।
- माता जी का नाम : श्रीमती जड़ाव देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक, बी. एड. एवं एल. एल. बी.।
- पदनाम : लेखक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ३ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- इश्क़ ए बेबसी।
- युवाओं की शक्ति।

प्राप्त सम्मान

- पुरूष शक्ति श्री पुरस्कार 2024।
- हमरूह प्रकाशन मंडल द्वारा प्रशस्ति पत्र।
- संबंधित साझा संकलन के लिए प्रशस्ति पत्रक प्राप्त हुए हैं।
- विचार क्रांति मंच द्वारा सम्मान पत्र।
- अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक मित्र मंडल, जबलपुर द्वारा प्रशस्ति पत्र।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अपने हैं हम

कहने को तो सब अपने है,
पर सच है, कुछ तो सपने है।
कुछ सपनों में अपने है।
यें कहने को बस अपने है।
वो सुनने को ही, बस अपने है ।।
"अपने है हम" ।।

अपनो में अपनापन कहाँ हैं ।
ये दिखावें में ही अपने है ।
वो सिखावें में अपने है ।
कहनें को तो सब अपने है हम ।।
"अपने है हम" ।।

अपने वो है, जो कहते नहीं, "अपने है हम" ।
हर कदम जो साथ देते हैं, वो अपने है हम" ।
कुछ तो अपनो में परायें है ।
कुछ परायों में भी अपने है ।।
"अपने हैं हम" ।।

हे मन्नू !
अपनों ने अपनो पर घात किया है।
'अपने हैं हम ' कहकर,
पिछे से खंजर घोंप दिया है।

अपने वो है, जो बिन बुलाये चले आते है ।
जहाँ हम नही होते, 'अपने है हम'
कहकर साथ निभाते है।
अपनापन उनके हर हाव-भाव मे होता है ।
अपनापन उनके स्वभाव में झलकता है।

अपनापन उनके सदाचार में होता है।
अपनापन उनके आचार - विचार में होता है।
अपनापन उनके लबो से नही,
हृदय की गहराई से झलकता है।।
अपने है हम

अपनो में अपनो की बात निराली है।
जब चंहु ओर संकट,
नैराश्य और अंधियारा छाया हो ।
तब वो, 'अपने हैं हम' कहकर
उजियारा करते आयें हैं।
अपनो में जब संकट के बादल छाये हो ।
बढ़ा साहस अपनो का,
हरियाली करते आयें हैं।।
'अपने है हम' ।।

अपने है हम कहकर नहीं,
कुछ करके दिखाइयें ।
अपने बनतें-बिगड़तें रिश्तो को बचाइये ।
स्नेह, प्रेम और धैर्य की बाधा पार कीजिये ।
अपनो के हाथो में अपना हाथ दीजियें।

हे मन्नू !
देने को कुछ भी नही,
बस विश्वास दीजियें ।
तू बढ़ा साहस और आगे बढ़
साथ तेरे खड़े हैं हम,
अपने हैं हम।।

– मुन्ना राम मेघवाल

ना तुम मिलें होते

ना तुम मिलें होतें, ना ईश्क का आगाज़ होता ।
ना शुरू होता, इश्क ए दिल का आलम ।
ना मैं तन्हा और लाचाऱ होता ।
इश्क क्या है, कैसे हो जाता है ।
वों सब कुछ तुमसें,
मिलकें ज़रा बताना है।।
ना तुम मिलें होतें,ना इश्क का
सिलसिला ना होंता ।।
वों छुप-छुपकें मेंरा आना,
सर्द रात में तेंरा इंतजार करना ।
मंदिर के बहानें तेंरा आना,
प्रसाद के संग फोन नंबर देना।
वों मुड़ मुड़ कें तेंरा देखना,
मेरा ठौकर खाकर गिरना ।
उठना,संभलना,फिर मिलना,
आँखों ही आँखों में बातें करना ।
वादें पर वादें करना,
वों तेरा रूठना और मेंरा मनानाा ।
ना तुम मिलें होते..शुरू ना
मोहब्बत का सिलसिला होता ।।
वों सब्जी के ठैलें पर मिलना,
गोभी के फूल में लव लेंटर देना,
तेरे भैंया को पता चलना,
लाठी,डंडों की बरसात होना ।
मेंरा मिलना और तेंरा बिछुड़ना ।
मेंरा तेंरें पास आना,
और वों तेरा मुंह फेंर लेंना ।
तेंरा मुझें गम़ देना और मेंरा,
तेंरे गम़ ए सैलाब में डूब जाना ।।
ना तुम मिलें होतें ..ना प्यार का
इज़हार होता ।।
दर्द ए दिल तड़प रहा है,
तेरी यादों में ज़ल रहा है।।
हे मन्नू ! एक बार तो मिल लें,
हैं कोई गिलें शिकवें, दूर कर लें ।
हुई है कोई, भूल मुझसें,
आकर मुझे सजा दे ।
यूं पीठ में खंज़र ना चला,
मेंरें सीनें में चाहें गोंली उत्तार दें ।।
ना तुम मिलें होतें.. ना मैं इश्क
ए बेंकरार होता ।।
नी़र बहता है, नयनों से,
हृदय से बहती रक्त-धारा है।
खड़ा हूँ मंझधार में,
थाम अंगुली राह दिखा दें।
मैं तेरे साथ हूँ, इतना सा विश्वास जगा दे।
तू कद़म बढ़ा और आगे बढ़,
इतना सा अरमान सजा़ दें ।।
ना तुम मिलें होंतें.., ना कभी
प्यार का सिलसिला होता ।।
थोड़ी सी मजबूरी है,
बस़ कुछ दिन की दूरी है ।
आ रही हूं, मिलने तुझसें,
कुछ पल दिल को समझा दे।
साहस बढा़ और आगें बढ़,
मेंरें हाथों में अपना हाथ दें ।
ना तुम मिलें होतें.., ना प्यार का
सिलसिला होता ।।

– मुन्ना राम मेघवाल

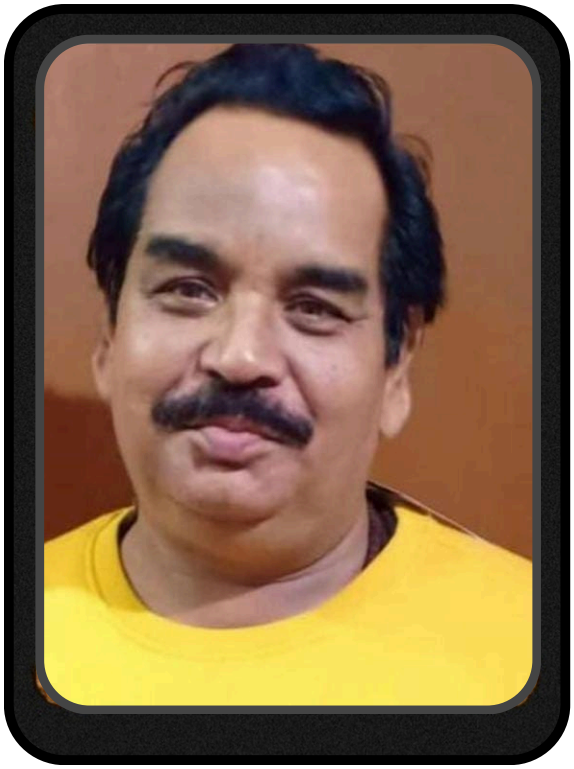

श्री सुरेन्द्र शुक्ला

मकरोनिया सागर, मध्यप्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. कोमल प्रसाद शुक्ला।
- माता जी का नाम : स्व. शांति भाई शुक्ला।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक ।
- पदनाम : सेवानिवृत्त शासकीय कर्मचारी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- हिन्दुस्तानी।
- पिता।
- मोर मताई।
- इत्ती सी बात
- महक

प्राप्त सम्मान

- दि ग्राम टू डे प्रकाशन समूह द्वारा सरस्वती सम्मान।
- स्वर्णिम दर्पण द्वारा साहित्य कुंज सम्मान।
- ADHRAT पब्लिकेशन हाउस द्वारा अभ्युदय लेखक सम्मान 2022 ।
- स्वर्णिम दर्पण द्वारा स्वर्णिम शिरोमणि सहित्य रत्न।
- बुंदेली साहित्य समूह टीकम गढ़ द्वारा शब्द श्री सम्मान।

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

महक

सुंदरता फूलों की
कितना झलकाती है,
झोंको के पवन की
कितना मस्ताती है।
फूलों के बदन से
एक खुशबू आती है,
तन मन को मेरे
कितना महकाती है।।

चिड़ियों की चहकन से
पंछियों के कलरव से,
ये मन को भटकाती है
कितना ये भरमाती है।
फूलों के बदन से
एक खुशबू सी आती है,
तन मन को मेरे
कितना महकाती है।।

सरिता की कल कल से
झरने की झर झर से,
मनचला के मन को
कितना अकुलाता है।
फूलों के बदन से
एक खुशबू आती हैं,
ये तन मन को
कितना महकाती है।।

- सुरेन्द्र शुक्ला

रसवंती

भौत गुरीरी रस पगी सी,
लग रई तोरी बतियां रे।
फूल झरत बातन में तोरी,
हूक देत सी छतिअन में।।

चितवन तो कजरारी तोरी,
मृग नयनी सी अंखियों रे।
नदिया कैसी है उफनती,
निंग रई ले बलखाईयां रे।।

हैरन हसन लगे मुस्कानीं,
किते मर जाए छलिया रे।
मनचला की हालात पतली,
घायल कर दव दईया रे।।

– सुरेन्द्र शुक्ला

श्री विनोद मिश्र सुरमणि

दतिया, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. महेश मिश्र मधुकर।
- माता जी का नाम : श्रीमती कमला देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (संगीत), संगीत प्रभाकर।
- पदनाम : प्रमुख कलाकार सामाजिक न्याय दतिया संयोजक इंटेक दतिया अध्याय।
- साहित्यिक अनुभव : विगत एक वर्ष से लेखन।
- संपर्क सूत्र : +91 9893437616

प्रकाशित कृतियाँ

- चतेवर
- दतिया धाम वृंदावन (प्रादेशिक पुरस्कृत)
- बुंदेलखंड की माटी कला
- सिजनार, लिखनार, दतिया एकादश,
- डॉ मानस विश्वास स्मृति ग्रंथ का संपादन

प्राप्त सम्मान

- सुरमणि मुंबई ।
- जागनिक महोबा ।
- ईसुरी सम्मान (म. प्र. शासन द्वारा घोषित)
- दतिया रत्न दतिया गौरव
- डॉ शंकर लाल शुक्ल बुंदेली सम्मान

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

साँप को दूध पिलाया तुमने (गीत)

साँप को दूध पिलाया तुमने,
कद से अधिक बढ़ाया तुमने,
प्रेम की बीन सुनाई न देती,
आस्तीन में छुपाया तुमने ।

चार दिवारी फांदे कूँदे,
दीन हीन बन संग में रहबै,
रखें पुराना जहर गले में,
समय मिले ही तुम पर उगले,
डसने की आदत है जिनकी,
उनको गले लगाया तुमने ।।

जिस भूमि पर पाते शरण,
तन मन धन का करें भरण,
मां कहने को हिंसक होते,
नफरत के बढ़ाते चरण,
जिस थाली में खाना खवाया,
उसमें छेद कराया तुमने ।।

रक्त बीज से पनप रहे हैं
मरें तो दो गज हड़प रहे हैं
भाई-भाई का नारा देकर
ऐसे जयचंद पनप रहे हैं
सुरमणि सुर असुरों के संग में
कैसा राग़ बनाया तुमने।।

- विनोद मिश्र सुरमणि

कुआं (गीत)

गांवन सें रीत रय कुआं
डारन सें देख रहे सुआ।।

पनहरिन पनघट पे अब नहीं दिखात
नोक झोंक सखियन की अब नहीं सुनात।
सास बहू ना दिख़ें फुआ ।।

टेसू की टेर मिटी, सुआटा की भोर
मामूलिया टूटी संग झूला की डोर
खेल बचे ताश और जुआ ।।।

बरा बरी गूंजन खों कोई नहीं खात
डलिया टिपारन सें सवई जी चुरात
आरन में सूख रये पुआ ।।

बिना खिली कलियन खो रोंध रौंद देत
रीत के रखैया खो आन नहीं देत
कैसें तब पूजेंगे कुआं ।।

– विनोद मिश्र सुरमणि

डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री विश्वनाथ सिंह।
- माता जी का नाम : स्व. जानकी देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर हिन्दी, यूजीसी-नेट, विद्या वाचस्पति एवं डी.लिट. (मानद उपाधि)।
- पदनाम : लेखक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत कुछ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

1) इक्कीसवीं सदी की समस्याएं और साहित्य।
2) रासेयो त्रिवर्षीय परिदृश्य।
3) वैश्विक आपदा: शिक्षा और साहित्य।
4) नयी कविता और नवगीत: युगबोध के संदर्भ में।
5) माली उपन्यास का समीक्षा वृत्त।

प्राप्त सम्मान

1) कला परंपरा साहित्य रत्न सम्मान, छत्तीसगढ़
2) 'साहित्य सागर' मानद उपाधि, कटनी (मध्यप्रदेश)
3) राष्ट्रीय विहिसा अलंकरण, प्रयाग (उत्तर प्रदेश)
4) राष्ट्रीय काव्य-भूषण मानद उपाधि, नाथद्वारा (राजस्थान)
5) अंतरराष्ट्रीय साहित्य सेवी सम्मान, चेन्नई (तमिलनाडु) इत्यादि...!

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

सपने हमारे अपनों के लिए

सपने
हमारे सपने
हमारे अपनों के लिए,
अपने
हमारे अपने
हमारे सपनों के लिए,
सपनों में अपनों का बल है
अपनों में सपनों का कल है
सपने जरूर हमारे अपने होते हैं
मगर पूरा होने पर
अपने भी थोड़ा-थोड़ा जी लेते हैं
पूरे हुए सपने को
जैसे उनके अपने पूरे हुए हों
क्योंकि हम भी तो-
उनके अपने होते हैं
हमारे सपने भी उनके अपने होते हैं
पूरे होते हैं दोनों के सपने
संग-संग !
सपने सचमुच
हमारे अपने
हमारे अपनों के लिए है !

– डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

वे ख़ामोश कविता ही तो हैं

दिखता है गहरा
निर्दोष चेहरा
बच्चों के बड़े होने तक
बच्चों के खड़े होने तक
पहरे होते हैं मासूमियत की
उनके चेहरे पर
पर जीवन पर्यंत
ऐसी ही मासूमियत दिखती है-
मां जी के-बाबू जी के दुलार में,
जीवन रचते हैं-
जिनके आधार में !
बच्चा हर घड़ी महसूसता है उन्हें
हवा का स्पर्श सूझता है उन्हें
दु:ख में- दर्द में
मलहम वही होते हैं,
लड़खड़ाती ज़िन्दगी की
व्यवस्था वही होते हैं !
उनके सख्त चेहरे में
कठोरता नहीं
बल्कि सृजन की भूमिका है
नदी की प्रवाह की तरह
परवाह की उनकी गति थमती नहीं
बस वह कहते नहीं
और
अनकहे शब्दों को हम समझते नहीं
वही शब्दों की परख आनी है,
माँ-बाप की अकथ कहानी है !
पढ़ना तो होगा
जिस तरह उन्होंने पढ़ा हमें,
जिस तरह उन्होंने गढ़ा हमें !
क्योंकि
वे ख़ामोश कविता ही तो हैं,
जिसमें ज़िन्दगी भरी हुई है !
ख़ामोश सविता ही तो हैं,
जिसमें रोशनी धरी हुई हैं !
ख़ामोश कविता के अनकहे कथन में
उभरी हुई ज़िन्दगी है-
हाथों में खींची गई लकीरों की तरह
जिसे पढ़ना तो होगा
भली-भांति
पहर-पहर
ठहर-ठहर
और अंधियारे में
जड़ते हुए रोशनी
आगे ही बढ़ना है,
ज़िन्दगी की किताबों को
करीने से गढ़ना है ! ताकि
ख़ामोश कविता जो अनकहे हैं,
उच्चारित हो सके हमसे।।

– डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

श्रीमती अल्पना प्रियदर्शी

बस्ती, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री राम कृष्ण।
- माता जी का नाम : श्रीमती कमला देवी।
- पति का नाम : श्री शुभम पाण्डेय।
- शैक्षणिक योग्यता : विद्या वाचस्पति।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं शोधार्थी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

प्राप्त सम्मान

- विश्व प्रतिभा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

आप सबकी माँ

चेहरा
किसकी ?
वही जनम देने वाली माँ की
रहा नहीं याद
परछाई से झांको थोड़ी सी सुराख होगी,
सब टटोल लिया !
बस जालों का मिला गुंबद,
नहीं रहा कुछ याद ,
उन तक जाने का कोई रास्ता?
सुनो ! शायद कोई आवाज मिले
आवाज?
जिस लोरी के साथ बचपन संभला,
नादानी बीती, जवानी उलझी,
उस एक आवाज के लिए तो,
बस रहता किस रात होगी,
उस आवाज की बरसात
पर कब !
उम्र तो अभी शुरुआत की है
किसकी ?
तुम्हारी
पर कहीं उनकी उम्र न गुजर जाए ।

– अल्पना प्रियदर्शी

औरत की व्यथा

औरत एक मूर्ति है
फिर भी सबको उसकी जरूरत है
कौन कहता है की वह केवल नाम की औरत है
न जाने क्यू सभी दिलों की दस्तक है
औरत ही श्रद्धा है, औरत मनोभावों की व्यथा है
वह अपनी तो न कुछ कहती
क्योंकी वह तो माटी की एक मूर्ति है
औरत सभी दुआओं से परिपूर्ण है
तभी तो वह घर की चार दीवारो की बागडोर है
न जाने कितने जुर्म सहकर अपने को निभाती है
तभी तो आगे चलकर औरत
सभी मुकामों को कुशलतापूर्वक कर पाती है
औरत को नासमझ , समझ कर आसन देते सभी
तभी वह अपनी नहीं किसी से कह पाती
इसलिए तो औरत एक माटी की मूर्ति कहलायी।

– अल्पना प्रियदर्शी

श्री नंदलाल मणि त्रिपाठी

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. वसुदेव मणि त्रिपाठी।
- माता जी का नाम : स्व. सरस्वती त्रिपाठी यशोदा।
- अभिरुचि : लेखन एवं अध्यापन
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक ।
- पदनाम : सेवानिवृत्त प्राचार्य।
- साहित्यिक अनुभव : विगत दस वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- एहसास रिश्तों का।
- नायक, कहानी संग्रह।
- सुबह का सच।
- मगरू का चुनाव।
- अधूरा इंसान प्रशासन स्तर पर

प्राप्त सम्मान

- नेपाल भारत वीरांगना फाउंडेशन राजेंद्र नारायण सम्मान।
- एन आर बी फाउंडेशन भव्या इंटरनेशनल इंडियन वेस्टिज अवार्ड 2019।
- साहित्य सृजन मंच स्वर्गीय विपिन बिहारी मैंहरोत्रा सम्मान।
- काव्य सागर यूट्यूब कहानी प्रतियोगिता सम्मान ।
- साहित्य कलश साहित्य रत्न पुरस्कार।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

कुरुक्षेत्र की अंतिम ललकार

देखो पार्थ
तुम जागे युग जागा
युग चेतना है लौटी।।

कुरुक्षेत्र कि समर भूमि
कटे मुंड काया से रक्तरंजित
लथपथ है लज्जित।।

कराहती अधर्म कि
अंतिम सांसे अभी शेष
महासमर का प्रेरक प्रणेता
सरोवर छिपा अवशेष।।

भीम प्रतिज्ञा का अंतिम
पल भी है आने वाला
अब भी शेष।।

ललकारो कायर को
छुपा हुआ विष वेल
माधव केशव का संकेत।।

गूंजी ललकार गदा युद्ध
आमंत्रण की समझ न
सका अहंकारी का
अधर्म अहं अंत संदेश।।

गूंजी ललकार गदा युद्ध
आमंत्रण की समझ न
सका अहंकारी का
अधर्म अहं अंत संदेश।।

जागृत हुआ सरोवर से
बाहर आया,
गदा युद्ध आमंत्रण
स्वीकार किया।।

महाभारत के महायुद्ध
कुरुक्षेत्र कि समर भूमि
में अंतिम युद्ध शिरोधार्य
किया।।

गांधारी का आदेश
वात्सल्य रूप में निर्वस्त्र
आओ पुत्र दुर्योधन माँ समक्ष
देती हूँ तुमको वज्र काया देह।।

माता का आदेश
दुर्योधन स्नान कर
चला मातु का लेने आशीष।

कृष्णा केशव ने देखा
जाना काल गति का अंतर्मन
वेष अट्टहास कृष्णा का सुन
दुर्योधन स्तब्ध खड़ा
पूछा केशव ने जा रहे नग्न हो
तुम कहाँ?

समझ न सका कृष्ण को
देख न पाया था स्वंय की
सभा मे विराट स्वरूप युग
सन्देश को।।

बोला माता का है आदेश
कृष्णा कि मुस्कान बोले
करुणा निधान
माता के समक्ष क्या
तू नंगा जाएगा ?

नंगा नाच किया
अपनो की मृत्यु पर
कुरुक्षेत्र के महासमर में
अंत समय युद्ध के
माता को लज्जित करके
तू क्या पायेगा?

– नंदलाल मणि त्रिपाठी

भविष्य की नारी

कर्म बोध की कन्या
दुष्ट दमन की दुर्गा
ब्रह्म ब्रह्मांड।।

कर्म धर्म संस्कृति
युग समाज राष्ट्र विश्व
समाज की संस्कृति
संस्कार सत्यार्थ प्रकाश।।

भाग्य भविष्य की प्रेरणा
नैतिक नैतिकता रिश्तों का
आधार।।

पुषार्थ प्रेरणा की गहना बहना
उत्कर्ष उत्थान सम्मान।।

नारी अबला कमजोर नहीं
युग विश्व समाज राष्ट्र की
प्रेरणा प्रतिष्ठा
जीवन मूल्यों की
गौरव महिमा मशाल।।

शांत शौम्य काल काली
अमृत विष मान आरजू
अरमान।।

योग्य योग्यतम नारी
सभ्य समाज की आधार।।

अपमान नही तिरस्कार नही
अस्तित्व इज़्ज़त मानव
मानवता का अंगीकार।।

शिक्षित सशक्त नारी
दृष्टि दिशा सृष्टि की नारी
मानव मानवता विश्व समाज में
वर्तमान शानदार रचती स्वर्णिम
इतिहास।।

– नंदलाल मणि त्रिपाठी

श्री बिजेंद्र अहीर

कोरिया, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री राम रतन जी।
- माता जी का नाम : श्रीमती बुधनी बाई।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी, संस्कृत, राजनीति और अंग्रेजी) एवं बी. एड.।
- पदनाम : प्रधान पाठक ।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- माता को भेट ।
- कोसम 1 व कोसम 2,।
- विविधा।
- कोरोना की विभीषिका और अन्य।

प्राप्त सम्मान

- साहित्यिक मित्र मंडल जबलपुर मध्य प्रदेश के द्वारा उत्तम सृजन सम्मान।
- काव्य संसद साहित्य समूह छत्तीसगढ़ के द्वारा कोरोना पर सर्वश्रेष्ठ सृजन सम्मान।
- शिक्षक कला व साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ के द्वारा सम्मान।
- अखिल भारतीय जिज्ञासा काव्य मंच के द्वारा राष्ट्र दिशा सम्मान।
- काव्यरंगी सम्मान ,काव्यदीप सम्मान।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

ग़ज़ल

साहस, हौसला और हिम्मत, बस दोस्तों ने दी है,
जरूरत पड़ी है तो नसीहत, बस दोस्तों ने दी है।

ज़माने की नज़र में हम आज भी कुछ भी नहीं,
हमारी ज़िन्दगी को इक कीमत, बस दोस्तों ने दी है।

ढूंढा हर एक जगह हमने, पर कहीं न मिला,
प्यार, वफा, और मोहब्बत, बस दोस्तों ने दी है।

रोका है जरूर हमें,ग़लत राह पर चलने से मगर,
हर नेकी के लिए इजाज़त, बस दोस्तों ने दी है।

ज़माने ने तो हमेशा हमें इनकार ही किया है,
हर बार हमें इक मुहलत, बस दोस्तों ने दी है।

ज़माने की बुराइयां हममें भी बहुत हैं मगर,
हर एक अच्छी आदत, बस दोस्तों ने दी है।

बेशक कुर्बान होते हैं सिपाही, सरहदों पर शान से,
दोस्ती के नाम पर मगर शहादत, बस दोस्तों ने दी है।

आओ समझें हम भी, दोस्ती की इस अहमियत को,
अलबत्ता गम बांट कर मुस्कुराहट, बस दोस्तों ने दी है।

– बिजेंद्र अहीर

गाथा सड़क की

हे पथिक! मैं सड़क हूं, कुरूप और कुरंग ।
समझना जो हो मुझे, चलो मेरे संग ।।

कैसी मेरी संरचना? कैसी मेरी बनावट?
मिट्टी, पत्थर, डामर की, है मुझमें मिलावट ।।

स्वभाव नितांत मेरा ,निश्चल, निष्पक्ष,निस्वार्थ ।
एक कर्तव्य एक धर्म, परमार्थ, परमार्थ, परमार्थ ।।

कहीं छोटी सी, कहीं अति विस्तार में हूं ।
निश्चित ही महत्वपूर्ण, इस बड़े संसार में हूं ।।

जुड़ता मुझसे शहर-शहर, जुड़ता गांव- गांव ।
चलता कोई लेकर सवारी, कोई अपने पांव ।।

गंतव्य तक जाने का, मैं ही सुलभ माध्यम ।
हो मानव मात्र या, वस्तु भारी भरकम ।।

सरल और संभव होता, मुझसे आवागमन ।
चाहो तो इस कार्य निमित्त, कर लो मुझको नमन ।।

अच्छे स्वास्थ्य में अपने, सबको आनंद दायक हूं ।
अन्यथा जग विदित है, कितनी कष्ट कारक हूं ।।

नित्य प्रति रखना, मेरा रखरखाव ।
दे सकती हूं वरना, तुमको गहरे घाव ।।

मुझ पर चलने के हैं, कुछ एक नियम ।
मानता न जब कोई, आ जाते हैं यम ।।

इतिहास के पन्नों पर, मान-सम्मान मेरा भी है ।
जी हां! जगतोत्थान में, अल्प योगदान मेरा भी है ।।

– बिजेंद्र अहीर

श्रीमती हेमलता साहूकार

कुरूद, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री प्यारे लाल साहू।
- माता जी का नाम : श्रीमती गोदावरी साहू।
- पति का नाम : श्री साहूकार साहू।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक, बी. एड. एवं पीजीडीसीए।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं शिक्षिका।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ३ वर्षों से सक्रिय लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- बचपन के खेल निराले।
- कस्तूरी सुगन्ध।
- कुछ लम्हें ऐसे भी।
- अलबेली चाय।
- मन की बात।

उपलब्धियाँ

- मेरे द्वारा लिखी कविता का चयन" बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड"के लिए चयनित बुक बचपन के खेल निराले में है।
- एक और कविता का चयन, अलबेली चाय जो "एशिया बुक वर्ल्ड" के लिए चयनित है, उसमें है।
- "आजादी के नायक" नामक बुक "इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड" में शामिल है।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अपनों की बात

अपनों की कहें क्या बात,
रहते हैं जो हमेशा साथ ।
हर पल होती खिच-खिच झिक-झिक,
हरदम होती है खिट-पिट खिट-पिट,
माने न कोई भी किसी की सलाह,
सुने नहीं कोई एक दूजे की बात।

माँ कहे पापा को तो,
मेरी कोई बात पसन्द ही नहीं आती ।
पापा कहे माँ दिनभर,
चिक-चिक करती रहती ।
भाई कहे दीदी हमेशा,
बड़प्पन दिखाती रहती ।

दीदी कहती भाई तू,
छोटा है तो छोटा ही रह ।
आपस में सब बोले एक दूजे को,
लेकिन जब कोई दूसरा कुछ बोले,
तो सब मिलकर भिड़ जाते हैं ।

एकता में जो शक्ति है,
वो सबको बता जाते हैं ।

जब कोई विपत्ति आये किसी एक पर,
तो हो जाते हैं सभी एकमत और एक साथ ।

सब मिलकर करते प्रार्थना ईश्वर से,
और फिर बन जाए सारे बिगड़े काम ।
हर दिन होते होली इनके,
और दीवाली होती हर रात,

जो मिलकर रहते हैं सदा साथ,
यही तो होती है,
अपनों की खास बात ।

हर मुसीबत में,
खड़े होते हैं जो साथ-साथ
हाथों में लेकर एक दूजे का हाथ,
यही होती है अपनों की खास बात ।

हरदम रहते हैं साथ - साथ ।
हरदम रहते हैं साथ - साथ ।।

– हेमलता साहूकार

मेरे मन के मीत

ओ मेरे मन के मीत,
तुझ संग ही लागी मेरी प्रीत ।
तुम जो साथ हो मेरे तो,
हर कदम पर पक्की,
हो जाती है मेरी जीत ।

हर पल जिसे गुनगुनाऊँ मैं,
तुम हो वो सुंदर गीत ।
मन को जो भाये ,
तुम हो वो सुमधुर संगीत ।

मैं ना जानूं नियम धरम,
ना जानूं जग की कोई रीत ।
ओ मेरे मन के मीत,
बस तुझसे ही लागी मेरी प्रीत ।

मन में बसी है तेरी ही सूरत,
जैसे हो मन्दिर में कोई मूरत ।
करती रहूं मैं बस तेरी ही बात,
सुबह से लेकर जब तक न हो रात।

चाहे तुम दूर रहो या पास,
तुमसे ही बंधी है मेरी हर एक आस ।
तेरा नाम सिमरकर ही,
चलती है मेरी हर एक श्वांस ।

कभी भी ना जाना मुझसे दूर,
एक तुम ही तो हो,
मेरे नैनों के नूर ।
तुम हो मेरे अपनों में ही शामिल,
जरा तुम भी समझों माज़रा-ऐ-दिल।

कहना चाहूँ जिससे मैं,
अपने मन की सारी बात,
तुम हो मेरे वो प्यारे मनमीत,
तुझ पर ही टिकी है मेरी,
हर हार और हर एक जीत ।

ओ मेरे मन के मीत,
तुझसे ही लागी मेरी प्रीत ।।

– हेमलता साहूकार

श्री सत्यजीत पुरकायस्थ

रायगढ़, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री सुनील कुमार।
- माता जी का नाम : श्रीमती सपना देवी।
- अभिरुचि : लेखन एवं सामाजिक कार्यों में प्रतिभाग।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (अंग्रेजी)।
- पदनाम : लेखक, कवि एवं स्क्रिप्ट लेखक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- रूप की सोफ़ा।
- फिल्म लेखन।
- देख छान फँस जाबे गीत लेखन।
- केकई साझा संकलन में रचनाएँ प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- रवींद्रनाथ टैगोर सम्मान, कोलकाता।
- वतन के राही सम्मान २००५।
- साहित्य गौरव २००६।
- स्वर्गीय श्री हरि ठाकुर सृति कवर्धा।
- माहिमा साहित्य सम्मान २००८।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

दिल के परिन्दे

आशमां में उड़ते परिंदे
कैसा लगेगा जब तुम्हे
कोई धर दबोचे
और कैद करदे
पिंजड़े में ,
उन्मुक्त दाना चुगने वाले
कैसा लगेगा जब तुम्हे
कोई प्यार से दाना खिलादे
हथेली में ?
प्यार का बंधन
गगन के स्वप्न दूर
दिल के लिए मजबूर
पिंजरे में ही .
छोटी सी दुनिया
झूठी दिलासा
सब मंजूर।
फिरंगियों से आजाद
पर तनाव की गुलामी
मन विचलित है
सुनहरा भविष्य की
खातिर ,
अरमान ऊँचे है
तोड़ दो जंजीर।

– सत्यजीत पुरकायस्थ

हिंद गाथा

उन्नति के शिखर पर मैं तुम्हे ले चलूँ ।
वीरता और साहस से हिंद गाथा लिखूँ ।
रक्त से सिंच कर जिस धरती में
खुशहाली हरितिमा आई ...
मैं उन महापुरूषों को श्रद्धा के
पुष्प अर्पित करता चलूँ ।
प्रेम और भाईचारे से हिंद गाथा लिखूँ ।
मां की ममता परिवार के सुख
के लिए तरसे उन रक्षकों के
भावनाओ में स्वप्न पंख लगता चलूँ।
त्याग और बलिदान से हिंद गाथा लिखूँ।
शरहद पर रेगिस्तान और बर्फ
कि न परवाह करता चलूँ
कर्म पथ पर पसीना बहाता चलूँ ।
असंख्य कंठो की जय हिंद
वीर शहीदों की हिंद गाथा लिखूँ ।

– सत्यजीत पुरकायस्थ

श्री हरमन कुमार बघेल

रायपुर, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. लखन लाल बघेल।
- माता जी का नाम : श्रीमती सुखिया बाई बघेल।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (राजनीति शास्त्र, हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य)।
- पदनाम : लेखक एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत दस वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- राष्ट्रीय सांझा संग्रह में कविताएं प्रकाशित हुई हैं।
- अनेक पत्र पत्रिकाओं में भी कई रचना प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- अंतरराष्ट्रीय कवि मंच हिंदू राष्ट्र परिषद द्वारा दो बार सम्मान प्राप्त कौशल साहित्य कला मंच आरंग द्वारा कोरोना योद्धा सम्मान
- वक्ता मंच सामाजिक संस्था से रचनाकार सम्मान
- मधुकलश साहित्य परिषद से सम्मान प्राप्त
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा अंतर्गत प्रशस्ति पत्र।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

सपनों का घर किसी जन्नत से कम नहीं है।

हर किसी का अपना सपनों का घर है
मिलते रहेंगे मेरे अपने अपनों से ही घर है
बस अरमान मेरा अपनों को खुश करना है
हाँ ऐसा ही मेरा अपना सपनों का घर है।।

घर-घर की कहानी में क्या-क्या कैसे है
जानों तो क्या कितनी और कहानी है
बस अपनत्व की भावना को अब जगाना है
नहीं तो अपनें भी परायों जैसे लगते है।।

देखा मैने इस अल्प आयु में क्या-क्या नहीं है
दुनिया पराए तो पराए पर अपना भी पराया है
बस नियत साफ़ हो अपनी तो दूसरों का साथ मिलता रहता है
फिर अपनी दुनिया जैसे अपनी ही मुठ्ठी में मानो समाई है ।।

अजीबो ग़रीब इस संसार की माया है
लोगों का अपना बहुत बड़ा स्वार्थ है
यह काया-माया का बाजार ही तो है
इसे बनाना या बिगाड़ना अपने ही हाथ में तो है।।

अपना सपनों का घर स्वर्ग से भी सुन्दर है
चाहने वालों की झोपड़ी भी महल जैसी है
बस मन की संतुष्टि मन के मंदिर से भी ऊंची है
क्योंकि अपनी कुटिया तो राजा जैसा है
हाँ राजा महाराजाओं के महलों से कम नहीं है।।

ये बिडम्बनाओं की दुनिया बहुत बेकार है,
अपने स्वार्थ के लिए अपनत्व की भावना को भूले है,
बस अहम् को त्यागकर जो जीवन जिए वह अपना है,
सचमुच ये सपनों का घर किसी जन्नत से कम नहीं है।।

– हरमन कुमार बघेल

आपका जन्म ऐसे ही नहीं हुआ है

कितने भी दुखों से भरा हो जीवन, न हार मान।
कर ऐसा तू याद करें जमाना ,बढ़ जाये यूँ शान।।

हिम्मत है तेरा ऐसा ,कई शेरों जैसा ये जान।
जीवन भी जीवन से कहे,मानते है तेरी आन।।

सम्मान मिले आपको, न मिले अपमान जान।
करना ऐसे ही काम,याद करें यूँ सारा जहान।।

आपका नाम नहीं, बोले काम,जिससे मिले सम्मान।
गौरव बढ़ाना आप अपना, बढ़ जाये आपका मान।।

काम बोलता है न बोलता जुबां,कर ऐसा काम।
हुनर का करते है कद्र सभी,करना ऐसा ही नाम।।

दुनिया की बाजार में न बेचना ,है अपना सम्मान।
बेचना वही जो बिकता है, बढ़ाना तू अपना मान।।

यह काया दिया है ईश्वर,कीमत कितनी हे! राम।
जीवन में क्या?रखा है,कर ले अच्छा सा काम।।

चार दिन की चाँदनी , फिर होगी अंधेरी रात।
उगता सूरज करता, रोशनी अपनी कायनात।।

ऐसा मानुष तन मिलता कहाँ,सौ जन्मों बाद।
कर ले ऐसा रे मनवा,न जीवन हो तेरा बरबाद।।

आपका जन्म ऐसे ही नहीं हुआ, कर ले नेक काम।
दुनिया पुकारेगी आपको,जीवन होगा तेरा नि:काम।।

ऐसे ही नहीं बनते है, इस दुनिया में लोग महान।
कर दिखा तू भी ऐसा, बन जा तू भी अतिमहान।।

महापुरुषों की उपाधि, यूँ ही नहीं मिलता मान।
अच्छे करके ही पाते है,ऐसा ही होता कर्म महान।।

करते रहना हरमन तू भी, अच्छे-अच्छे हर काम।
सोचने दे दुनिया को, हरमन करता ऐसा ही नाम।।

– हरमन कुमार बघेल

श्री देवानंद मिश्र

मधुबनी, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. श्रीधर मिश्र।
- माता जी का नाम : श्रीमती सच्ची देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (अर्थशास्त्र), पुस्तकालय विज्ञान , बी ए ड, एवं शास्त्री संस्कृत साहित्य ।
- पदनाम : लेखक, कवि एवं शिक्षक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- सांझा संकलन आशा का दीपक (के बी राइटर्स प्रकाशन झाझा बिहार)
- मन मेरा उद्धार करो (के बी राइटर्स झाझा बिहार)
- विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कहानी एवं कविता प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- उम्मीद का दीपक सांझा काव्य संग्रह सम्मान।
- नव उदय पब्लिकेशन सम्मान।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अच्छे दिन

हर पल सोचूँ कोई बताए
कब आएँगे अच्छे दिन
मिली देश को आजादी फिर
कब आएँगे अच्छे दिन।

एक से बढ़कर एक योजना
देश विकास के लिए बने
सुदृढ़ हो नित अर्थव्यवस्था
तब आएँगे अच्छे दिन।

कल-कारखाने कई लगे फिर
कोई बेरोजगार ना हो
इसरो नासा एम्स बने फिर
तब आएँगे अच्छे दिन।

अपनी सीमाएं हों सुरक्षित
पडोसी से कोई बैर ना हों
अमन-चैन हो दसो दिशाएँ
तब आएँगे अच्छे दिन।

गाँव-गाँव हो पक्की सड़कें
विद्यालय हो चुस्त-दुरुस्त
सबके लिए सुलभ हो शिक्षा
तब आएँगे अच्छे दिन।

वैदिक शिक्षा मूल हो अपना
निज भाषा गौरव सम्मान
फिर से उभरें विश्व गुरु बन
तब आएँगे अच्छे दिन।

कोई भुखा पेट ना सोएँ
कोई मजबूरी ना रोएँ
सबके सपने होंगे पूरे
तब आएँगे अच्छे दिन।

शस्य-श्यामला धरती अपनी
बंजर कोई भूमि ना हो
हर किसान खुशहाल बने फिर
तब आएँगे अच्छे दिन।

जन-नेता नैतिकता समझें
जन-सेवा में हों तत्पर
राष्ट्रहित हो सबसे ऊपर
तब आएँगे अच्छे दिन।
तब आएँगे अच्छे दिन।

– देवानंद मिश्र

मन की बात

देश में पसरा सन्नाटा है
चलो करें हम मन की बात।

बन्द पडे सब कल कारखाने
अर्थव्यवस्था खस्ताहाल
महंगाई है गगन छू रही
चलो करें हम मन की बात ।

शिक्षा का स्तर गिरता प्रतिदिन
स्वास्थ्य व्यवस्था खुद बीमार
जनता की आवाज दब गई
चलो करें हम मन की बात।

जाति-धर्म में उलझ गई है
पढे-लिखे की भी जमात
मंदिर मस्जिद मुद्दा बन गई
चलो करें हम मन की बात।

बढ़ी हुई बेरोजगारी है
लूट डकैती भ्रष्टाचार
त्राहि-त्राहि कर रही है जनता
चलो करें हम मन की बात।

राजनीति बस एक रोजगार
फलता-फुलता दिन और रात
नेताजी की पौ बारह है
चलो करें हम मन की बात।

– देवानंद मिश्र

श्रीमती सरिता गुप्ता

कामरूप, असम

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. केदार प्रसाद रविदास।
- माता जी का नाम : श्रीमती आशा देवी।
- पति का नाम : भूषण कुमार गुप्ता।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (वाणिज्य)।
- पदनाम : लेखिका कवयित्री एवं शिक्षिका ।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ०५ वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

सावन

इंतजार है उस पावन सावन का,
सावन की बलखाती झूलों का
सजनी, साजन को याद करें,
जब कूं कूं कोयल आवाज करें।

सावन की मेहंदी है ऐसी भाती,
प्रेम की खुशबू जैसे इसमें समातीं,
लिए जो दर्द दिल में छुपाती,
आस कभी तो, बांट वो देखती।

लिए बेलपत्र, भांग, धतूरा
प्रतिमाह शिव को दूध अर्पण करना,
लिए जो आए आस महीना,
सावन का ये खास महीना।।

– सरिता गुप्ता

माँ ओ माँ

माँ ओ माँ , ओ मेरी प्यारी माँ
लिखने के लिए सब है व्यर्थ यहां.....
पर कहने के लिए,
है दिल में अंबार भरा.....
हर एक रिश्ते से तूं है ऊपर माँ,
जब जब भी हूँ मैं रोई माँ.....
आँसू पोंछ मेरा,
हैं तूने मुझमें उम्मीद भरा.....
माँ ओ माँ , ओ मेरी प्यारी माँ,
कोई पढ़ें भी तुझको ,
तो है कम है यहां .....
हर इक दर्द को अपने ,
है अंदर सहती माँ .....
दबी मुस्कान से अपने ,
सबको खुश हैं किया .....
ईश्वर का मैंने ,
है शुक्रिया किया .....
क्योंकि, दूजा ईश्वर रूपी माँ
है तूने मुझको दिया.....
माँ ओ माँ , ओ मेरी प्यारी माँ।

– सरिता गुप्ता

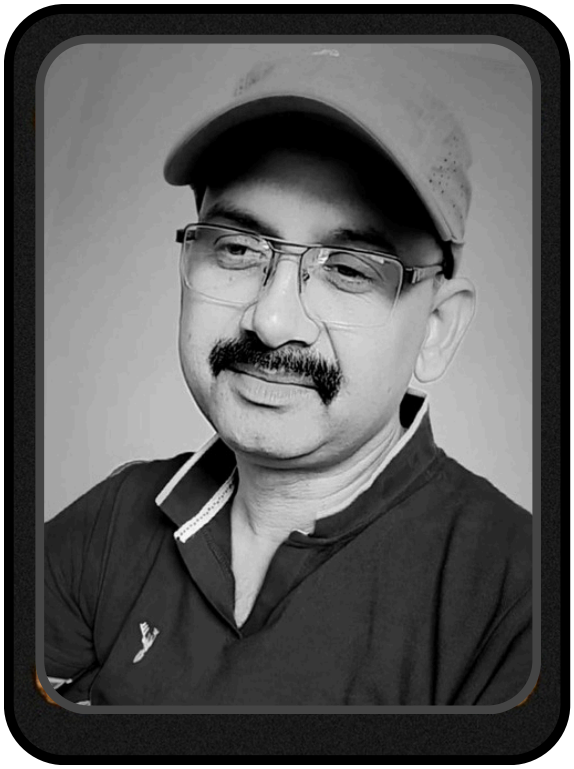

श्री नीरज सिंह

टनकपुर, चंपावत

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री पुत्तू सिंह।
- माता जी का नाम : श्रीमती पुष्पा देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक एवं बी. एड.।
- पदनाम : कवि एवं प्रधानाचार्य।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- साहित्यनामा दिसंबर अंक में रचना प्रकाशित ।
- इंकलाब पत्रिका में रचना प्रकाशित।
- अनुभव मासिक पत्रिका।
- द काव्य मासिक पत्रिका ।
- रौशनी की कतारे (साहित्य सागर)।

प्राप्त सम्मान

- उत्तराखंड काव्य् गौरव सम्मान।
- सुमित्रानंदन पंत साहित्य सम्मान।
- गुरु द्रोणाचार्य साहित्य सम्मान।
- मात्र भाषा साहित्य सम्मान।
- काव्य शिरोमणि साहित्य सम्मान।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीवन की आपाधापी

इस जीवन की आपाधापी में
छूट गए कई काम
इतनी उहापोह है जीवन में
दुश्मन बना लिये तमाम

अच्छा बुरा क्या सोचे
जब दौलत का स्वाद चख लिया
मैं मैं के चक्कर में
हमको पीछे कर दिया

आगे बढ़ने की चाह में
सबसे आगे निकल गए
दौलत की राह पर
रिश्ते नाते सब छूट गए

चोटी पर पहुंचकर
नीचे देखकर डरता है
दौलत हाथों में है
बाकी सब छूटा है

दो पल फुर्सत से बैठो
सोचो कि क्या पाया है
मेहनत करके खुद
औरों को मौज कराया है

ऊंचे उठो नीचे देख कर
चलो जरा संभल संभल कर
ख्याल रहे दब ना जाए कोई
मिलो सभी से खुश होकर

अपनों की बातें सुन लेना
अपनी जुबां को सी लेना
घर परिवार की खुशी के खातिर
एक दूजे का दामन थामे रहना

– नीरज सिंह

नारी शक्ति

मिलाकर कन्धा
पुरुषो के साथ चलती है।
आज की नारी है,
ये कहाँ किसी से डरती है।

मिलाकर कदम पुरुषों से ,
अब नारी शान से चलती है।

अबला कहने वालो जरा संभलकर,
नारी अब फाइटर प्लेन उड़ाती है।

कमतर नही अब वो किसी से ,
वो दुश्मनों पर निशाना लगाती है।

खुश है, चार दीवारी में रहकर,
अपनी ममता सब पर लुटाती है।

नारी शक्ति से मातृ शक्ति मे वह
निःपुणता पूर्ण हो जाती है।

पुरुष विफल जहाँ हो जाये ,
नारी हिम्मत से शास बधाती है।

लोक लाज ही गहना उसका,
अपने पर आ जाये फिर कहाँ सुनती है।

त्याग प्रेम की मूरत है वो ,
नारी ही घर को स्वर्ग बनाती है।

– नीरज सिंह

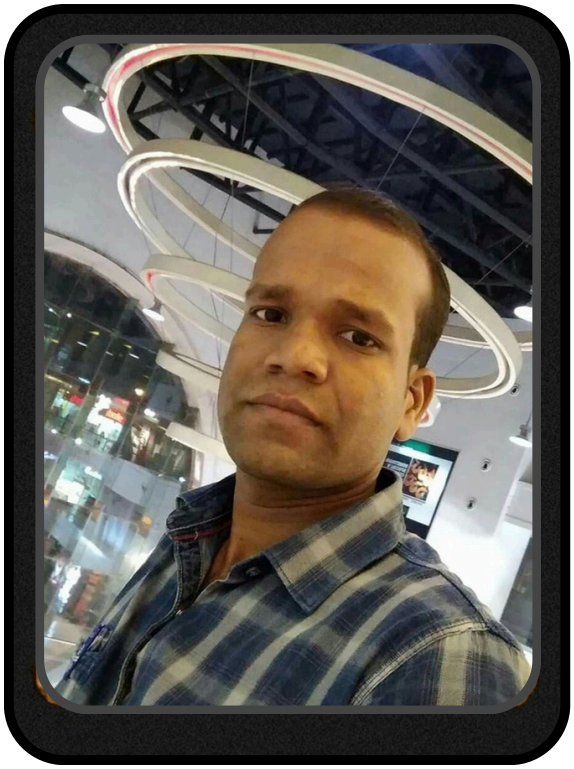

श्री सुरेन्द्र कुमार रात्रे

जांजगीर – चांपा, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री नारायण प्रसाद रात्रे।
- माता जी का नाम : श्रीमती गंगा देवी रात्रे।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (गणित)।
- पदनाम : लेखक, कवि एवं शिक्षक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत कुछ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- काव्य कलश वार्षिकांक।
- गुरुचरणाम्बुज।

प्राप्त सम्मान

- समता साहित्य पुरस्कार ।
- महात्मा ज्योतिबा फुले फेलोशिप नेशनल अवॉर्ड।
- काव्य कलश शिक्षक रत्न अवार्ड।
- काव्य कलश युवा रत्न अवार्ड।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अपना सपना

करो जग में कुछ काम विशेष,
ध्वजा फहरे अपना सपना है।
हरो दुखिया जन पीर अपार,
सुधीर सुहावन को जपना है।।

पुनीत अनंत विशाल प्रभो,
अब अग्नि महान सदा तपना है।
विवेक विहान नवीन लिए,
प्रथमेश अथाह वही अपना है।।

उमंग तरंग पराग भरो जन सेवक,
पंथ प्रसून खिला दो।
करो उपकार सुधार समाज दुखी जन
प्रेम अथाह पिला दो।।

विषाद घिरे जन का हित देख,
उन्हें उनका अधिकार दिला दो।
मिसाल बनो इस जीवन में
अब तो सुरेश पहाड़ हिला दो।।

– सुरेंद्र कुमार रात्रे

अर्पण है प्रिय

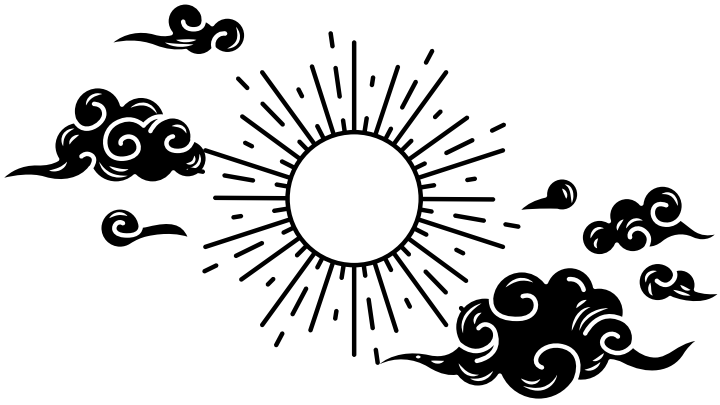

आज घटा इतना कहती वन भोर लगे मनभावन है ।
वायु हिलोर किलोल करे सुन मौसम देख सुहावन है ।
भोर समान लगे अब ये सब साँझ विहार लुभावन है ।
कोकिल मंजुल कूक रही मकरन्द मदी घन कानन है ।।

वेणु बजे मधु राग सजे जब प्रेम निवास करे मन में ।
गागर गीत गिलास भरे तब प्रीत पलाश सजे तन में ।
सागर में सरि आन मिले नलिनी खिलती जल जीवन में ।
सार यही जब प्रेम समाहित अर्पण है प्रिय आँगन में ।।

चंद्रप्रभा नभ हर्ष लिये थिरके नभ में मधुगान करे ।
रात्रि वधू मचले प्रिय से भर आनन प्रेम हुलास भरे ।
चाँद चकोर निहार रही मन में प्रिय चंद्र सुवास झरे ।
नेह स्नेह सुरागित है छन से छन के प्रिय वास करे ।।

– सुरेंद्र कुमार रात्रे

श्री प्रवीण कुमार

अलीगढ़, यूपी

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री मथुरा प्रसाद।
- माता जी का नाम : श्रीमती बीना देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (राजनीति विज्ञान), नेट।
- पदनाम : सहायक अध्यापक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत एक वर्ष से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- गुरुचरणाबुंज।
- वीरों की कहानी कवियों की जुबानी।
- किरदार।
- ममता की छांव।

प्राप्त सम्मान

- रामधारी सिंह दिनकर सम्मान ।
- राम किशन महतो शिक्षक सम्मान।
- अटल काव्य सुरभि सम्मान 2024
- संत गुरु घासीदास साहित्य सम्मान आदि।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अपनों की अहमियत

अपनों से मिलती है खुशियां ,
अपनों से मिट जाते गम ।
अपना कोई बिछड़े तो ,
आंखें हो जाती है नम।
ठोकर लगती जब दुनिया में,
अपने ही सहारा देते हैं।
जब दुनिया में हम पड़ जाते अकेले,
अपने ही हाथ थाम लेते है निभाते हैं।
अपनों की अहमियत समझो तुम,
अपने ही साथ निभाते हैं।
कितनी भी मुश्किल आये जीवन में,
साथ छोड़ कर नहीं जाते हैं।
जब विपत्ति स्वयं पर आयेगी,
अपने ही तो याद आयेंगे।
हर पल साथ देंगे जीवन में,
जीवन को कष्ट मुक्त बनायेंगे।
कभी तो अंधेरे जीवन में ,
अपने ही उजाले बन जाते हैं।
कितने भी आंधी तूफान आये,
अपने ही सहारा बन जाते हैं।

– प्रवीण कुमार

थाम लो किसी का हाथ

किसी का हाथ थाम कर तो देखो
किसी का सहारा बन कर तो देखो
थाम लो किसी का हाथ जीवन में,
ये दुनिया खुशनुमा बन जायेगी।
प्रेम को ताकत बना लो,
घृणा कमजोर पड़ जाएगी।
मुस्कुराहट बन जाओ किसी चेहरे की,
जीवन में खुशियां ही खुशियां आयेंगी।
जब कोई दुख में सहारा बन जाएं,
उसकी अच्छाइयों का सिला देना।
जब कोई बुरे वक्त में काम आए ,
उसके अहसानों को ना भुला देना।

– प्रवीण कुमार

श्री उमा कांत सहाय

पटना, बिहार

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. श्रीनाथ सहाय।
- माता जी का नाम : स्व. अन्नपूर्णा देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक, एल. एल. बी., सर्टिफिकेट कंप्यूटर विज्ञान ।
- पदनाम : सेवानिवृत्ति शोध विश्लेषक जनसंख्या शोध केंद्र।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- 200 से अधिक बार सम्मान प्राप्त

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

दोष किसे दूँ

ज़िन्दगी की
महरुमियों को
देख ,

यह सोचने
लग जाता हूँ,
दोष किसे दूँ ?

खुद को दूँ,
या आपको दूँ,
कर्म को दूँ,
या भाग्य को दूँ।

दोष किसे दूँ ?
ज़मीं को दूँ
या आसमां की
बेबसी को दूँ,

धरा पे
भेजने वाले
विधाता को दूँ
या लाने वाले को दूँ

खुद से हीं
सवाल करता हूँ
दोष किसे दूँ ?

यह सोचते सोचते
सुबह से शाम
हो जाती है।

ख़्वाबों में
खो जाता हूँ
सपनों में
सो जाता हूँ

पर सोच नहीं
पाता हूँ
दोष किसे दूँ ?

– उमाकांत सहाय

मसाला

हाँ मैं मसाला हूँ,
खट्टा, मीठा, तीता , बदरंग मसाला हूँ।
पर जिसमें मिल जाता हूँ,
उसका रंग बदल देता हूँ।
हाँ मैं मसाला हूँ,

बालू , सीमेंट और जल से
मिल जब मैं मसाला बन जाता हूँ,
भटके हुए ईंटों को जोड़ देता हूँ।
ना जाने कितने महलों का
निर्माण कर देता हूँ ,
हाँ मैं मसाला हूँ,

राजनीति का मसाला जब बन जाता हूँ,
अच्छे अच्छों की कुर्सी हिला देता हूँ।
हाँ मैं मसाला हूँ,

ना समझना मुझको कमजोर,
मैं आंखों से आंसू निकाल देता हूँ।

हाँ मैं मसाला हूँ,
मैं विध्वंसक भी हूँ,
जब मैं बम का मसाला
बन जाता हूँ।
हाँ मैं मसाला हूँ,

गुगुल, अगरबत्ती, का मसला
जब बन जाता हूँ,
खुशबू जीवन में फैला देता हूँ,
लोगों की जिंदगी को
मैं बदल देता हूँ।

हाँ मैं मसाला हूँ,
कर्म करो तुम जैसा
फल वैसा मैं देता हूँ,
हाँ मैं मसाला हूँ ,
हाँ मैं मसाला हूँ

– उमा कांत सहाय

डॉ. नौशाब सुहैल दतियावी

दतिया, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : हसीन उद्दीन कुरैशी।
- माता जी का नाम : मुजफ्फर जमाल कुरैशी।
- शैक्षणिक योग्यता : एम ए साहित्य (जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर) अदिव माहिर, अदीव कामिल(अलीगढ़ विश्वविद्यालय), तीब (तिविया कॉलेज अलीगढ़ विश्वविद्यालय)।
- पदनाम : चिकित्सा कार्य (यूनानी हकीम)।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ४० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- दर्द - ए- हयात 1992।
- चराग जलता रहा 2009।
- अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- मिर्ज़ा ग़ालिब सम्मान 2009।
- जोश मलीहाबादी सम्मान 2010।
- अकबर इलाहाबादी सम्मान 2011।
- मीर तकी मीर सम्मान 2011।
- साहित्य सम्राट सम्मान 2012।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

ग़ज़ल

दुनिया से नफरत मिटाओ तो जानें।
मोहब्बत की शमा जलाओ तो जानें।।

दिलों में ना हो जिसके मतलब परस्ती।
किसी को यूं अपना बनाओ तो जानें।।

किस्मत तुम्हारे कदम चूम लेगी।
हुनर पैदा करके दिखाओ तो जानें ।।

जहां पर ना होती शहीदों की इज्जत।
कोई ऐसी बस्ती दिखाओ तो जाने।।

हवाओं का रुख जो बदल कर दिखा दे
कोई ऐसा तूफान उठाओ तो जानें ।।

हर एक शेर महफिल में हलचल मचा दे
सुहैल ऐसी गजलें सुनाओ तो जानें।।

– डॉ नोशाब सुहैल

पास बैठो – ग़ज़ल

पास बैठो घड़ी दो घड़ी के लिए,
यह बहुत है मेरी, जिंदगी के लिए।।

मर मिटो दोस्तों, दोस्ती के लिए
कुछ ना बाकी रखो, दुश्मनी के लिए।।

आज नजरो से मुझको पिला दो सनम
है यह काफी मेरी, तशनगी के लिए ।।

कर दिया उनकी फुरकत ने ऐसा निढाल
लब तरसते हैं अब, इक हसीं के लिए।।

होगा तुमसे ही रोशन जहां देखना
शमां बन जाओ तुम, तरिगी के लिए।।

मैं भटकता रहा मंजिल मिली ना मुझे
आ भी जाओ मेरी, रहवरी के लिए ।।

कौन किसका हुआ अब इस जहाँ में “सुहैल”
क्यूं तड़पता है फिर तू किसी के लिए।।

– डॉ नोशाब सुहैल

श्रीमती मंजु बरनवाल

बर्दवान, पश्चिम बंगाल

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. अर्जुन लाल बरनवाल ।
- माता जी का नाम : स्व. दमयंती देवी बरनवाल।
- पति का नाम : श्री दुलाल प्रामाणिक।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी)।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं भूतपूर्व शिक्षिका।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ८ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- माँ ।
- महिला दिवस।
- प्रकृति की प्रहार।
- कुछ तेरी भी रजा थी।
- अबला नहीं सबला।

उपलब्धियां

- नवोदय पत्रिका।
- सन्मार्ग (समाचार पत्र)।
- बरनवाल स्मारिका।
- कुछ लम्हें ऐसे भी।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

दिवा स्वप्न

जाने क्यों हर वक्त एक दृश्य भयावह,
मानस पटल पर छा जाता है।
कभी सोए तो कभी जागे हुए में,
वह रह रहकर आ जाता है।

कहीं चीख रही है मानो बेटियां,
अपनी लाज बचाने को ।
तो कहीं मांग रही भीख बेटियां ,
अपनी जान छुड़ाने को ।

विनती कर रही उन्हीं गिद्धों से,
जो टूट पड़े उन्हें लूट लेने को।
मजबूर हो कर जोड़ रही,
अंततः तैयार मर मिट जाने को।

विडंबना यह कैसी देखो जहां,
इंसानियत हो रही है शर्मसार।
विधर्मियों और विध्वंशियों द्वारा ,
बहु बेटियों की इज्जत हो रही तार तार।

ये सूअर की औलादें हर जगह,
नन्हीं मासूम कलियों को नोच रहे।
टूट पड़े ये भेड़िए सरेआम,
मां बहनों की आबरू खसोट रहे ।

हे प्रभु उनके गलत इरादे,
क्या नहीं होंगे कभी खत्म?
जगा दो इनकी भी अंतरात्मा को,
जिससे हो जाए सभी पापों का अंत।

– मंजु बरनवाल

नासूर आतंकवाद

आज की ज्वलंत समस्याओं में,
आतंकवाद है सबसे प्रमुख
इससे भयभीत तथा असुरक्षित जनजीवन ,
यह मानवता से हो रहा विमुख।

ले लेता यह जान निर्दोषों का,
कर जाता है अपूरणीय क्षति.
इसके विध्वंशक परिणाम से,
हो जाता है सब कुछ अस्थिर।

इससे उत्पन्न होते सभी देश में,
आर्थिक सामाजिक मानसिक क्षति
चारों तरफ बर्बादी दिखती ,
बच जाता सिर्फ क्रंदन और सिसकी।

शिक्षा स्वास्थ्य संपत्ति पर भी,
पड़ रहा है इसका भयंकर मार.
कैसे अंत हो आतंकवाद का,
जो जलकुंभी सा रहा पैर पसार।

इससे समाज में है फैलता,
सांप्रदायिकता का तनाव.
देश विभाजन को मिलता बढ़ावा ,
और कमजोर होता आपसी सद्भाव।

रुक जाते हैं सभी विकास कार्य,
दुरुपयोग होता केवल संसाधनों का.
क्या मिल जाता है आतंकियों को,
जहां मिट जाते हैं सारे मानव अधिकार.

क्यों हो रहा मानव अधिकारों का हनन,
क्यों हो रहे हैं उन पर अत्याचार.
माता बहनों और बेटियों पर,
क्यों हो रहे हैं हिंसा और बलात्कार।.

मानव को उनके जीवन जीने से,
क्यों कर रहा आतंकवादी दूर,
क्या मिल रहा है इसे यह सब कर,
क्यों हो रहा इतना निर्दय निष्ठुर बर्बर क्रूर।.

है आज की यह सबसे बड़ी समस्या,
जो बनते जा रही है नासूर.
क्यों सोया है संयुक्त राष्ट्र आज,
क्यों नहीं दिख रहा उसे भरपूर।

दुनिया की आज तमाम बड़ी शक्तियां,
हैं दिख रही लाचार मजबूर,
आतंकवाद की आतंक के आगे,
भारत अमेरिका हो या रूस।

क्या नहीं होगा इसका अंत कभी?
क्या नहीं लगेगा इस पर लगाम?
अब भी वक्त है उपाय सोच ले जग ,
वरना भुगतने होंगे भयावह परिणाम।

जलकुंभी रूपी इस आतंकवाद को,
अब समूल नष्ट करना होगा.
शिक्षा, जागरूकता ,सख्त कानून लागू कर,
पूरे विश्व को ईमानदारी से लड़ना होगा।

– मंजु बरनवाल

श्री राकेश राज

जौनपुर, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री श्याम राज।
- माता जी का नाम : श्रीमती उर्मिला देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक और बी. एड. ।
- पदनाम : कवि एवं सहायक अध्यापक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत कुछ वर्ष से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अरमान

कितनी ही दूरियां हो कितना ही फासला हो
एक दिन तो एक दूजे से मिलना है हमको।
कोई कुछ भी कर ले जुदा कर न पाएगा
एक साथ जीना और मरना है हमको।।

जालिम जमाने की क़ातिल निगाहों से
ए दोस्तों बच के निकलना है हमको
प्यार में जो मिले रंजो गम
हमदम हँसकर सहना है हमको।

सपने जो सजोये हैं खुद को लेकर
साथ रहकर ही पूरा करना है उनको।
मोती जो बिखरे पड़े हैं खुशी के
मोहब्बत के धागों में पिरोना है हमको।।

जगह ना मिले जहाँ मैं तो गम नहीं
एक दूजे के दिलों में रहना है हमको।
इस "राज" को न भुला देना दिल से
ऐ दोस्त बस यही कहना है हमको।

– राकेश "राज"

जिंदगी

जिन्दा लाशों की एक भीड़ चारों तरफ
मौत से भी बड़ा हादसा ज़िंदगी।
जिन्दगी उसकी है जो इसे झेल
सबको देती नहीं रास्ता जिंदगी।।

उन्हीं की तरह खूबसूरत बहुत
उन्हीं की तरह बेवफा जिंदगी।
यु तो जीने की ख्वाहिश बहुत है मगर
देखिये मोड़ लेती है क्या जिंदगी।।

जिंदगी में सदा मुस्कुराते रहो
फासले कम करो दिल मिलाते रहो।
कुछ न कर सको तो दुआ ही करो
खुद बताती हैं जीने का फलसफा जिंदगी।।

हर किसी को देती या खुशियां बहुत
है किसी से कभी क्यों ख़फ़ा जिंदगी।
या ख़ुदा तू सलामत रखे प्यार को
बस यही मांगती है दुआ जिंदगी।।

– राकेश "राज"

श्री मनोज मंजुल

कासगंज, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. राम प्रकाश गुप्ता।
- माता जी का नाम : स्व. सरला देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (PCM) एवं बी. एड.।
- पदनाम : प्राचार्य एवं कवि।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २२ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- गुरुचरणाम्बुज।
- शब्दो की महक।

प्राप्त सम्मान

- संचालक शिरोमणि सम्मान 2017।
- शिक्षा सारथी शिक्षक सम्मान 2024।
- उत्तर प्रदेश पारस रत्न सम्मान 2024।
- राष्ट्र गौरव शिक्षक सम्मान 2025।
- अटल बिहारी वाजपई मेमोरियल अवार्ड 2025।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

मैं शिक्षक हूँ

मैं शिक्षक हूँ,
मैंने ही तो किया ज्ञान का सवेरा है।
मैंने सदगुण की आभा से मिटाया अज्ञान अंधेरा है।।

मैं भारत का हूँ पथ प्रदर्शक, जन का गण मन करता हूँ ।
मैं ज्ञान कुंड की अग्नि में, हर दशा का चिंतन करता हूँ ।।
मेरे पग चिह्नों पर चलकर, जग में होता उजेरा है।
मैंने सदगुण की आभा से, मिटाया ----------।।

जीवन पर्यंत विष पीकर भी, विश्व को पीयूष देता हूँ ।
बनाकर रंक से राजा को, मैं खुद आशीष देता हूँ ।।
अपना तन मन धन देकर, झोपड़ी में किया बसेरा है।
मैंने सदगुण की आभा से, मिटाया----------।।

सब कुछ अर्पण करके में, बीज राष्ट्र के बोता हूँ ।
ज्ञान बांट कर सबको मैं, तभी चैन से सोता हूँ ।।
सबको शिक्षा देकर मैंने, पूरा ज्ञान उकेरा है।
मैंने सदगुण की आभा से, मिटाया----------।।

सारी समस्या को हल करके, सबको सफल बनाता हूँ ।
नामुमकिन को मुमकिन करके, जय का उदघोष कराता हूँ ।।
युग निर्माता बनकर मैंने, संस्कृति को किया घनेरा है।
मैंने सदगुण की आभा से, मिटाया----------।।

– मनोज मंजुल

माँ

माँ तेरे चरणों से बढ़कर, दुनिया में जन्नत क्या होगी।
माता की गोदी से बढ़कर, दुनिया में शोहरत क्या होगी।।

सारे सुखों की खान है माता, सारी खुशियों की जान है माँ ।
करुणामयी और दयामयी, सारे गुणों की शान है माँ ।।
माता की नित पूजा करें हम, इससे बड़ी इबादत क्या होगी।
माता की गोदी से ----------।।

अंतर्मन में ध्यान है माँ का, और हृदय में बास है।
माँ के पैरों में नतमस्तक, ईश्वर मेरे पास है।।
माँ के आशीषों से बढ़कर, जग में दौलत क्या होगी।
माता की गोदी से----------।।

माँ का ख्याल रखें हरदम, चाहे निकले मेरा दम।
माँ तो ममता प्यार लुटाती, दूर करें बच्चों का गम।।
माँ का हाथ रहे सर पर तो, विश्व की ताकत क्या होगी।
माँ की गोदी से बढ़कर--------।।

माता के बिन घर भी सूना, सूना रहता हर आंगन।
माता के बिन हर बच्चे का, खाली रहता है दामन।।
मंजुल माँ के प्यार से बढ़कर, दूजी अमानत क्या होगी।
माँ की गोदी से बढ़कर--------।।

– मनोज मंजुल

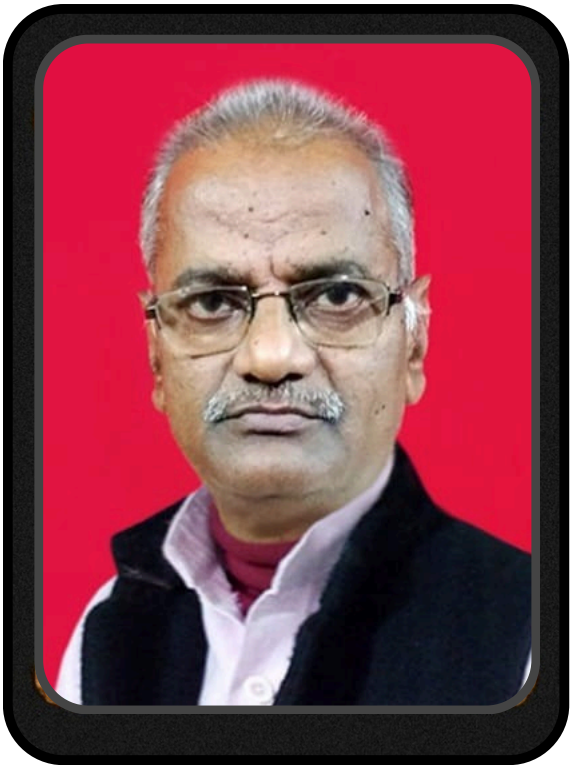

श्री तुलसीराम "राजस्थानी"

नावां सिटी (राजस्थान)

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. श्री सुवालाल कुमावत।
- माता जी का नाम : स्व. श्रीमती गलकू देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (वाणिज्य)।
- पदनाम : कवि, लेखक व सामाजिक कार्यकर्ता।
- साहित्यिक अनुभव : विद्यार्थी जीवन से ही लेखन में सक्रिय।

प्रकाशित कृतियाँ

- 66 साझा काव्य संग्रह प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- 1000 से भी अधिक सम्मान प्राप्त ।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

तेरे बिना कुछ भी नाहीं

जीवन में
जिनके आने से
जिन्दगी में
बहार आई
जिनकी बदौलत
मेरी गृहस्थी में
हर प्रकार से
खुशहाली छाई
जिन्दगी के
कठिन सफर में
जिसने
थामे रखा हाथ मेरा
जिसकी वजह से
मैंने
कंटीले मार्ग में भी
कुछ अलग राह बनाई
कैसे भूल जाऊँ
मैं उनकी मेहरबानियां
जिनकी बदौलत
मैंने
इस जगत में
अपनी
अलग पहचान बनाई
ऐ मेरे हमराही !
जन्मदिवस की
तुमको
हृदयतल से बधाई
तू है तो ही
मेरे जीवन में बहार है
तेरे बिना ऐ प्रिये,,,
भला ये संसार भी कोई संसार है.

– तुलसीराम राजस्थानी

दिल जलाए बैठे हैं

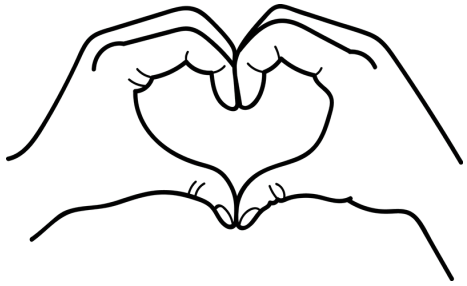

हर सुबह
चली आती है,
हर शाम
चली आती हैं।

याद बीते लम्हों की
दिन-रात चली आती है,
तुम नहीं आए
तुम्हारा
संदेश भी नहीं आया

आने को केवल
यादों की बारात चली आती है
तेरी प्रीत में ऐ प्रिये !
सारी सुधबुध भुलाए बैठे हैं

लाज-शर्म अब कर दी है
तुम्हारे ही हवाले
तेरी मासूम छवि को
हम दिल में बसाए बैठे हैं

यूं कब तक परीक्षा लोगे
तुम मेरे प्यार की ऐ सनम!
हम
रोशनी की चाहत में
अपने दिल को जलाए बैठे हैं.

– तुलसीराम राजस्थानी

सुश्री आरती निगम

उज्जैन, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री जय प्रकाश निगम।
- माता जी का नाम : श्रीमती मंजू निगम।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक , कंप्यूटर एप्लिकेशन।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं ग्राफिक्स डिज़ाइनर।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ६ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- लोग क्या कहेंगे?,
- मेरे पापा,
- वो बारिश की मस्ती,
- वो स्कूल के दिन,
- ये बेटियां,
- मेरी माँ

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

नारी इंसाफ मांगती है

हाँ मैं बेटी हूँ इसलिये मैं पराई हूँ,
ना जाने क्यों इस धरती पर बनाई हूँ,
दुर्गा का रूप हूँ काली का रूप हूँ,
मानो तो मैं देवी स्वरूप हूँ,
फिर भी हवस के पुजारियों की मैं भूख हूँ,
बंदिशों मैं पल कर भी मैं बेचारी हूँ,
हां मैं एक अबला नारी हूँ।।

हर एक ने बेटियों पर उंगली उठाई है,
नन्ही-नन्ही परियों पर भी अपनी हवस दिखाई है,
फिर भी इंसाफ की ना कोई गुंजाइश है,
क्यों उन हवस के भेड़ियो को सजा नहीं मिल पाई है,
क्यों हर बार बेटियों की बलि चढ़ाई है,
क्या बेटियां इस लिये खुदा ने बनाई है।।

क्यों बेटियां हर बार ठुकराई है,
क्यों बेटियों की ना हुई सुनवाई है,
क्यों बेटियों पर बंदिशें लगाई है,
क्यों बेटो को इज्जत करना नहीं सिखाई है,
क्यों बेटियां ही हर बार गुनहगार कहलाई है।।

– आरती निगम

खुशियाँ

अक्सर हम दूसरों को खुश करने में,
खुद की खुशियाँ ही भूल जाते है।

भूल कर खुदको,
दूसरों को खुश करने में लग जाते है।

जब हमको जरूरत होती है अपनो की,
तब खुदको ही अकेला पाते है।

हर मोड पर सबको अपना कहने वालों के,
कुछ अलग ही अंदाज नजर आते है।

कौन क्या सोचेगा इस चक्कर में,
हम खुद ही आगे नहीं बढ़ पाते है।

अक्सर जो सबका सोचते है,
वो आख़िर मैं खुदको ही तन्हा पाते है।

इस जीवन में अक्सर सब ये भूल जाते है,
अकेले आए थे अकेले ही जाना है।

– आरती निगम

श्री सुबोध कुमार कुलश्रेष्ठ

गौतम बुध नगर, यूपी

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. ज्ञानेंद्र प्रसाद कुलश्रेष्ठ।
- माता जी का नाम : श्रीमती मीरा कुलश्रेष्ठ।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक एवं बी. एड.।
- पदनाम : लेखक, कवि एवं अध्यापक ।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- पुस्तक गुरु चरण में दो रचनाएं,
- पुस्तक शब्दों के महक में तीन रचनाएं

प्राप्त सम्मान

- पुस्तक गुरु चरण में दो रचनाओं के लिए सम्मान प्राप्त हुआ है एवं
- शब्दों के महक में तीन रचनाओं के लिए

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

रिश्ते तो साधने हैं..

अपने हैं तो सपने हैं,
कच्ची डोर से बंधे हैं रिश्ते साधने तो हमने हैं,
कभी मान तो कभी स्वाभिमान आड़े आया,
कभी किसी की नाराजगी तो उम्मीदें जायज लगी,
समझते हैं अहमियत सभी की तो रिश्ते साधने तो हमने है,

वो शादियों में सबका इकट्ठा हो जाना,
महफिलों का मजा दे जाती थी,
इन अवसरों पर दूरियां भी नजदीकियों में तब्दील हो जाती है,
इन अमूल्य पलों को सहेजना तो है, तो रिश्ते साधने तो हमने हैं,

इन रिश्तों के बढ़ने से मैं और मजबूत होता चला गया,
हर मुश्किलों में एक काफिला साथ था मेरे ,
इस ताकत को तवज्जो तो देनी ही थी तो रिश्ते साधने तो हमने हैं.

– सुबोध कुमार कुलश्रेष्ठ

फरिश्ता

जब इस नये शहर में मैं आया,
एक शख्स फरिश्ता बनकर मेरे करीब आया,
जिसने इस शहर का हाल मुझे सुनाया,

कौन से रास्ते सीधे हैं, और कौन से हैं टेढ़े,
हर रास्ते पर जाकर उसने मुझे बताया,
संभलना कहाँ पर है, और डटना किस ओर है,
यह भी बखूबी उसी ने सिखलाया,

आसान नहीं था इस शहर में रुक जाना,
असली कौन सा चेहरा नकली कौन हैं,
पहचाना उस ही ने मुझे बताया,

मुमकिन नहीं था बगैर उसके कुछ भी न था ,
आज जो अपने हैं बहुत जल्दी मुंह मोड़ लेते हैं,
इस शहर मे, बीच सफर मे हाथ छोड़ देना आदत बहुतो की है ,
बखूबी लोगों की इस मंशा का भी पाठ पढ़ाया,

शुक्रगुजार हूँ इस शख्श का
जो सही मायने मे मेरा दोस्त कहलाया,
एक फरिश्ता मेरी जिंदगी में आया,
और जीने और जीतने के नुस्खे बता गया।।

– सुबोध कुमार कुलश्रेष्ठ

श्रीमती सुमन गर्ग

उत्तम नगर, दिल्ली

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. राजकुमार गर्ग।
- माता जी का नाम : श्रीमती ओमवती गुप्ता।
- पति का नाम : श्री विकास कुमार।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (मनोविज्ञान, शिक्षा शास्त्र), बी. एड. एवं एम. एड.।
- पदनाम : स्वतंत्र शिक्षिका एवं कुशल गृहिणी ।
- साहित्यिक अनुभव : विगत ५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- बेटी।
- हिंदी राष्ट्र का गौरव।
- प्रेरणा पुंज।
- आशा।
- नदी

प्राप्त सम्मान

- रामधारी सिंह दिनकर साहित्य सेवा सम्मान २०२४।
- हिंदी आइडल मानद उपाधि सम्मान।
- नेपाल भारत मैत्री अंतराष्ट्रीय सम्मान।
- हिंदी काव्य शिरोमणि मानद सम्मानोपधि।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

अगर तुम न होते

बागों में बहार ये चमन गुलज़ार
बिन बारिश ठंडी फुहार
कदमों में बिन पायल झंकार
कैसे मुमकिन था? अगर तुम न होते।

आंखों में चमक लबों पर महक
दिल की धड़कनों में अरमानों की खनक
कैसे मुमकिन था? अगर तुम न होते।

ये वादियां ये हंसी दिलकश नज़ारे
ये खुशगवार मौसम मेरे नूर ए इश्क को निखारे
कैसे मुमकिन था? अगर तुम न होते।

हर आरज़ू हर सज़दे में सलामती तुम्हारी
हर लम्हा दीदार ए यार की बेकरारी
इज़हार से पहले सब कुछ समझ जाते
कैसे मुमकिन था? अगर तुम न होते ।

चांदनी रात में तारों भरी चादर मेरे नज़र करना
मेरी एक आह पर तुम्हारा टूट कर बिखरना
दिलासा देने की भरसक कोशिश करना
कैसे मुमकिन था? अगर तुम न होते।

– सुमन गर्ग

कुछ दूर अकेले चलकर देख

माना दुनिया रंग बिरंगी
चहुं ओर प्रिय मित्र सगे संबंधी,
आपाधापी रेलमपेल।
रुक, सोच जरा
कुछ दूर अकेले चलकर देख।।

जीवन की नित नई पहली
पग पग पर सुलझानी है,
संघर्षों से पार पाए जो
उसकी नित नूतन जवानी है।
उठना, गिरना,गिरकर उठना
परिपक्वता की निशानी है
बढ़ा कदम मत पीछे देख।।
कुछ दूर अकेले चलकर देख।।

जीवन में जब उजियारा होगा
संगी साथी झूमेंगे ,
हर नयन में होगा प्रणय निवेदन
भाल तुम्हारा चूमेंगे ।
मत संशय पालो, अमिट लिख डालो
दूर गगन तक कर शंख नाद अभेद।।
कुछ दूर अकेले चलकर देख ।।

जब दृढ़ तुम्हारा निर्णय होगा
बदलोगे फिर भाग्य की रेख।
कुछ दूर अकेले चलकर देख ,
कुछ दूर अकेले चलकर देख।।

– सुमन गर्ग

श्री आनंद श्रीवास्तव

प्रयाग, उत्तर प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री प्रेम बहादुर।
- माता जी का नाम : श्रीमती परमेश्वरी देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (राजनीति विज्ञान, हिंदी साहित्य)।
- पदनाम : सेवानिवृत जिला पंचायत राज अधिकारी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २० वर्षों से लेखन।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

रात है, चाँद है

रात है चाँद है सितारे हैं ,
हर तरफ प्यार के नजारे हैं,
तुम कहां खो गए फिजाओं में,
मुंतजिर हम फ़कत तुम्हारे हैं।

खो गए हम तुम्हारी राहों में
दिल मेरा है तेरी पनाहो में
अब ये दुनिया कहे जो कहना है
तुम हमारे ओ हम तुम्हारे हैं

– आनंद श्रीवास्तव

याद के फूल जब महकते हैं,
हम तेरे साथ साथ चलते हैं,
अब कहां नूर है गुलिस्तां में,
अब कहाँ बाग में बहारें हैं ।

अब के सावन उमड़ के बरसा है,
मन मेरा भी बहुत ही तरसा है,
फिर भी तुम उदास मत होना,
हम तेरी याद के सहारे हैं।

रंग गुलशन में जब बिखरते हैं,
फूल जब वादियों में खिलते हैं,
तब तुम दिखते हो गुंचे गुंचे में,
पत्ता पत्ता तुम्हे पुकारे है।

कविता

कविता,
सावन की फुहार नहीं,
कविता,
बसंत की बहार नहीं,
कविता,
अन्तःस्तल में
जब्ज,
पीड़ा है।
जो ग्रीष्म
की
तपती धूप
सी,
दग्ध हृदय में,
सुलगती रहती है।
और
कभी चक्षु में,
अश्रु बन
छल कती है।
तो कभी
कागज पर,
शब्द बन
उभरती है।

– आनंद श्रीवास्तव

डॉ लाल सिंह किरार

मुरैना, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री फूल सिंह किरार।
- माता जी का नाम : श्रीमती रेणुका बाई किरार।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिन्दी), एम. एस. डब्ल्यू. एवं विद्या वाचस्पति (हिन्दी)।
- पदनाम : लेखक, कवि, राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा (जबलपुर) एवं सहायक प्राध्यापक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- चंबल सुमन काव्य संग्रह।
- मन के सीप काव्य संग्रह।
- कलम की आवाज सांझा काव्य संग्रह।
- 30 सांझा काव्य संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित।
- राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में लेख।

प्राप्त सम्मान

- हिंदी काव्य रत्न मानद उपाधि सम्मान।
- अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा गौरव सम्मान 2024।
- अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद सम्मान।
- नारायण साहित्य शाला भारत ट्रस्ट।
- साहित्य सारथी सम्मान।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीवन संतापों का घेरा

जीवन संतापों का घेरा,
रोज ही होता नया सबेरा।
हर क्षण एक संघर्ष निराला,
सारा ताप तुम्हीं ने पाला ।

धर्म शील धीरज की तेरी ,
समय कठिन परीक्षा लेगा ।
अग्नि में जल तप कर तेरा,
शुद्व स्वर्ण रूप निखरेगा ।

हर एक बात नई सीखोगे,
जीवन शैली के रंग सीखोगे ।
हस कष्टों से पार उतरने के,
तब जाकर तुम गुण सीखोगे।

मिले सफलता कैसे जग में,
ऐसा एक नया जतन सीखोगे ।
इन तापों को जो सह जाते,
वो नर जग में सफल कहाते।

अपने पग चिन्हों से भू पर,
सुंदर सा एक लक्ष्य बनाते ।
आने वाले युगों युगों तक,
मानव उनकी गाथा गाते ।

ऐसा कुछ हम भी कर जाए,
जीवन में एक नाव बनाए ।
जिस पर चढ़कर मानव ,
संतापो से कुछ मुक्ति पाए ।

– डॉ लाल सिंह किरार

सड़क हादसों से बचें

सड़क हादसों से बचें,
रखे हमेशा ध्यान ।
दाएं बाएं देख कर,
करे सड़क को पार ।
कुछ पल के धैर्य से,
बच जाते हैं प्राण ।
परिवार तुम से बना,
घर की हो तुम जान ।
तुम बिन जीते जी मरे,
बहुत बड़ी हो हानि ।
मात पिता के लाडले,
बच्चों के हो भगवान।
जीवन को पहचान कर,
कर लो यह संकल्प ।
वाहन को धीमा रखें ,
केवल एक ही विकल्प।
जब भी निकलो बाइक से,
सदा रखो यह ध्यान ।
हेलमेट के बिन कभी ,
रखो ना एक भी पांव ।
जीवन बड़ा अमूल्य,
समझो इसका मूल्य ।
सड़क हादसों से बचें,
यह विनती कर जोर।

– डॉ लाल सिंह किरार

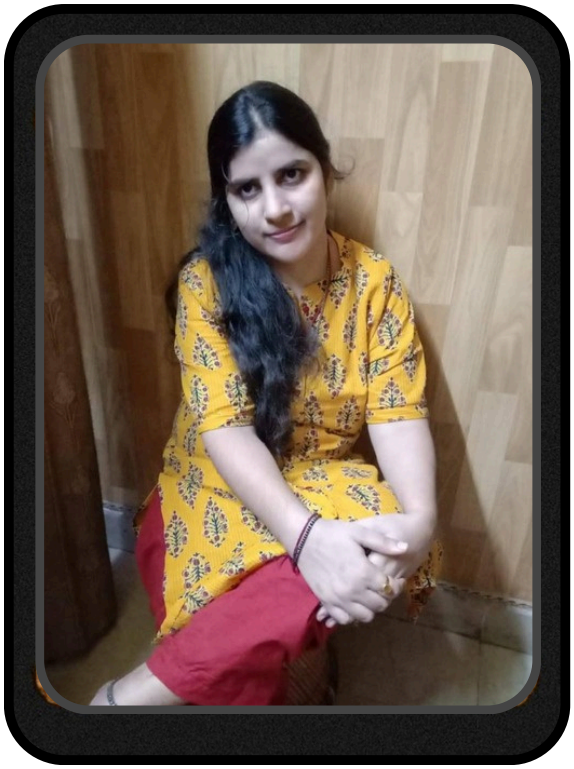

सुश्री सपना शर्मा

उत्तम नगर, दिल्ली

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रमेश कुमार ।
- माता जी का नाम : श्रीमती कमलेश देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (वाणिज्य), एल. एल. बी.।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं अधिवक्ता (सर्वोच्च न्यायालय)।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २० वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- इसी वर्ष एक पुस्तक में एक ग़ज़ल ये मौसम नया नया सा लगता है प्रकाशित हुई है।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

तुम्हारी कविता

छिपे मत रहो तुम
यों अंतर्मुखी होकर,
उनके हज़ारों मत हैं तो क्या
तुम्हारा भी तो एक विचार है,
मन की मिट्टी में दबा हुआ;
उठो, चलो सींचो उसे
भावनाओं का जल लेकर,
रोशनी तो पड़े उस पर भी
जो फूट रही इन शब्दों से;
तभी तो अंकुरित होगा,
वो पौधा तुम्हारी कविता का...

– सपना शर्मा

रंग

रंग है,
कि क्या है,
ये जो दिखता है मुझे-
रोशनी के कुछ टुकड़ों में,
कभी ढ़लता, कभी उभरता सा;
कल्पना की खुशबू लिए,
साँसों में जैसे गुँथता सा;
मूँदी पलकों के तले,
खुद में ही कुछ-कुछ बुनता सा;
सिमटे-सिमटे शब्दों के
अर्थों पर रहे बिखरता सा;
ये जो दिखता है मुझे
कविता सा,
रंग है
कि क्या है...

– सपना शर्मा

श्रीमती नीना श्रीवास्तव

जबलपुर, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री वीरेन्द्र श्रीवास्तव।
- माता जी का नाम : श्रीमती कृष्णा श्रीवास्तव।
- पति का नाम : श्री के. के. श्रीवास्तव।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी एवं अर्थशास्त्र), संगीत विशारद।
- पदनाम : लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत एक वर्ष से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- माँ ।
- माँ का आँचल।
- प्रीत की डोर।
- सांवरे की बंसी।
- पिताजी।

प्राप्त सम्मान

- साहित्यिक हस्ताक्षर मंच द्वारा सम्मान पत्र।
- मैं भी कलमकार मंच द्वारा प्रशस्ति पत्रक।
- साहित्य संगम बुक्स प्रकाशन मंडल द्वारा साझा संकलन में सहभागिता हेतु प्रशस्ति पत्रक प्राप्त।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करती हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करती हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

मन की अभिलाषा

कुछ रास्ते ऐसे बने
जहां फूल बिछे हर कदम पर
दिन की चमक रातों की दमक
मेरे आसपास फैले चंदन महक
पेड़ में छिपे परिंदों की चहक

मन में है न जाने कितनी आशाएं
दूर गगन की छांव में
टिम टिम करती एक आस है
पंख लगाकर उड़ने की आस है

कुछ करने की चाह मन में है
कुछ पाने की कोशिश मन में है
जो जिंदगी से डर कर भी
हौसला जगाते है

विश्वास संकल्प की आशा से
उदीप्त मेरा तन मन है
सुदूर क्षितिज के आलोक से
आलोकित यह जीवन हो

अब पाया एक नया जहां
जहां भाप बना पानी
फिर पग पग में बरसा
मोती बन चुके थे

कुछ न कुछ तो हासिल होगा
जो मुझे मंजूर होगा
आज अमृत मिल जाएगा
मन की अभिलाषा यही है

छोटा था जब अनुभव मेरा
सोचने की शक्ति भी कमजोर
लिया निर्णय तभी झटक के
सोचा चलकर कुछ नया बनाए

आज हम भी आगे बढ़ेंगे
आज हम भी आगे चलेंगे
कभी न कभी तो मिलेगी मंजिले
बस चलते रहो जिंदगी में

खिल गया चेहरा पाकर
वर्षों की हमारी मेहनत
अब पाया एक नया जहां
जहां मंजिल अपनी सपने अपने

– नीना श्रीवास्तव

बसंत ऋतु

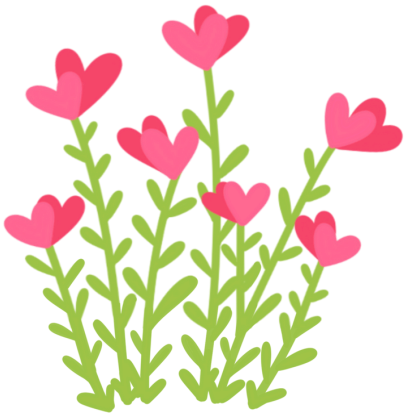

ऋतुओं का राजा बसंत
ठहरो पृथ्वी ठहरो हवाएं
ठहरो ऋतुएं ठहरो लताएं
इस रचनाकार से मिलकर जाओ
यह ऋतुओं का राजा बसंत है

इसके बिना अधूरी है
तुम्हारी सारी सुंदरता
सृजन शीलता कोमलता
यह बसंत है

टेसू के फूलों की तरह
पीठ पर लाद रखा है
भीनी भावनाओं को
मदमाती हवाओं को
लहराती लताओं को

प्राकृतिक सौंदर्यता से ओतप्रोत
इठलाती फूलों की महक
सरसों के फूलों की ओड के चादर
धानी चुनर जैसे लहराती पवन

चुपके से सारे ग्रह नक्षत्र
समा जाते है धरती के गर्भ
अंकुरण के साथ साथ
फोड़ते है नए नए कोपला

ब्रह्मांड रचने वाला रचनाकार
हमारे हृदय में कुचाले भर रहा है
प्रेम हमारे नयूबो से निकल रहा है
सुगंध बनकर बिन बोले ही

सुन रही है प्रेमिकाएं
दिलों की आवाज
कुछ रचने को दिल बेचैन है
बसंत आ गया है
ठहरो पृथ्वी
ठहरो ऋतुएं
ठहरो हवाएं
ठहरो लताएं

– नीना श्रीवास्तव

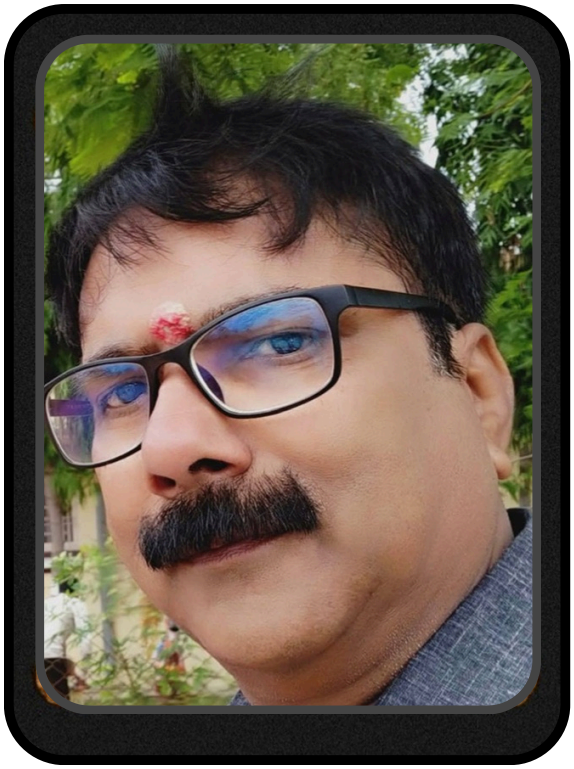

श्री राम प्रकाश गहोई

ग्वालियर, मध्य प्रदेश

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. जगदीश नारायण गहोई।
- माता जी का नाम : स्व. लक्ष्मी देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (गणित), परास्नातक (अर्थशास्त्र) एवं सी .ए .आई .आई . बी ।
- पदनाम : पेंशनर एवं इन्वेस्टमेंट सलाहकार,पूर्व मुख्य प्रबंधक पीएनबी।
- साहित्यिक अनुभव : विगत १५ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- माटी की पुकार।
- पुनर्मिलन।
- यादें एवं टूटते रिश्ते।
- निर्मल जल।
- नभ की धारा।

प्राप्त सम्मान

- साहित्य विभूषण 2023 में मिला।
- कलम वीर अलंकरण जनवरी 2025।
- ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा हिंदी सम्मान 2015 में।
- आकाशवाणी शिवपुरी द्वारा कविता पाठ हेतु आमंत्रण 2007।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

सैनिक

जो अपने जीवन का दान करे ।
जो अपने राष्ट्र का मान रखे ।
जो साहस का ही परिचय दे ।
उसको सैनिक कहते है ।।

जो दिन रात समय न सोता हो।
जो हिम पर्वत पर जीता हो ।
जो राष्ट्र मान का रक्षक हो ।
उसको सैनिक कहते हैं ।।

जो जान हथेली रखता हो ।
जो दुश्मन सीने छलता हो ।
जो गोली खाकर न मरता हो ।
उसको सैनिक कहते हैं ।

जिस युवा की भीगी तरुणाई।
वनवास करे और त्याग करे ।
जिस वीर जवानों के बल पर ।
हर सीमा प्रतिरक्ष रहे ।।

जो बच्चों में संस्कार भरे ।
जो खतरों पर हुंकार भरे।
जो अपनी जान बलिदान करे ।
उसको सैनिक कहते हैं ।

मैं नमन करूं निज तन मन से ।
जीवन के जीवित पन्नों में ।
जो अमर करे हर गाथा को ।
उसको सैनिक कहते हैं ।।

हर सैनिक के त्याग और
शौर्य के लिए मेरा नमन ।।

– राम प्रकाश गहोई

जीवन का अर्थ

चुप रहना जिसने सीख लिया।
जीवन जीना फिर सीख लिया।।
जीवन का आनंद सही ।
खुश रहना उसने सीख लिया ।।

जब अर्थ से अर्थ निकलता है ।
तब अनर्थ अर्थ हो जाता है ।।
इस कान सुनी उस कान निकल ।
मन साफ तभी रह पाता है ।।

शिकवे को गले लगाओ न ।
और बातचीत न बंद करो ।।
हँसते गाते दिन निकलेंगे ।
स्वार्थ सिद्धि न कभी करो ।।

छोटी छोटी अच्छी बातों को ।
जिसने करना सीख लिया ।।
जीवन सरल सबल करके।
सम्मान भी पाना सीख लिया ।।

सिर्फ अपने कर्म किये जाओ ।
झंझट में भी न उलझो तुम।।
संकट यदि फिर आये कभी ।
हिम्मत से काम बनाओ तुम।।

ये जीवन बहुत ही छोटा है ।
समय चक्र न रुकता है।।
हर पल को जीना है तुमको ।
हर पल का प्रतिफल मिलता है ।।

चुप रहना जिसने सीख लिया।
जीवन जीना फिर सीख लिया।।
जीवन का आनंद सही ।
खुश रहना उसने सीख लिया ।।

– राम प्रकाश गहोई

श्री रामसागर कश्यप

जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रामकुमार उर्फ दऊवाराम कश्यप।
- माता जी का नाम : स्व. सुमित्रा कश्यप।
- शैक्षणिक योग्यता : कृषि शास्त्र।
- पदनाम : कृषक।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- जीना मरना वतन के वास्ते।
- कृषक हमारे अन्नदाता
- माता-पिता मेरे आदर्श।
- मध्य भारत का फेफड़ा हसदेव।
- दहेज भगाओ बेटीयां बचाओ।

प्राप्त सम्मान

- धारा काव्य रत्न अलंकरण 2023।
- बागेश्वरी धारा सम्मान 2024।
- धारा काव्य रत्न अलंकरण सम्मान 2024।
- गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड 2024-25।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

हसदेव हमारे जंगल

हसदेव हमारे जंगल, चुपके रह जाते हैं।
काट काट उनहे, विरान कर जाते हैं।
कितने पेड़ पौधों ने, अपने दुखड़ा सुनाते हैं।
काट कर मारे जाते, हम मानव को वारे जाते हैं।

अपने बचपन की, कहानी वे सुनाते हैं।
छोटे छोटे पेड़ जब, उनमें उगे जाते हैं।
तरसते पानी को, कितने मर जाते हैं।
लोगों कितने को काट, अपने काम चलाते हैं।

कितने सालों साल, बढते बढते लगते हैं।
गर्मी के मौसम आते, सुख सुख जाते हैं।
बढते कितने सालों से, रूप बड़ा कर जाते हैं।
मानव के फेफड़ा बन, जीवन उनके चलाते हैं।

मिल जुल कर हम सब, जिंदगी बिताते हैं।
छोटे बड़े पक्षी रहते, हाथी शेर भालू।
आदमी सभी मुझमें, मिल जुल निवास करते।
एक दुसरे के दुखों की, हम सब निवारण करते हैं।

जंगल से लकड़ी, जड़ीबूटी फल फुल पाते हैं।
पानी हवा बरसात, उपजाउ मिट्टी देते हैं।
मध्यभारत का फेफड़ा, हसदेव जंगल कहें जाते हैं।
नदी निकाल किसानों पर, जीवन चलाते हैं।

– रामसागर कश्यप

समता सरलता हममें जब आ जाएगा।

आगे जन बढ़ जाओ, कदम तो उठाओ।
रूठे लोगों को, मिल कर समझाओ।
सफलता पाने के लिए, सपने तो देखाओ।
समाज के जागरूकता पर, सब मिल जाओ।

सस्कृति हमारे भारत का, दुनिया में फैलाओ।
आने वाले कुल में, संसकार भर जाओ।
बचपन में आचरण, सुधार कर जाओ।
अज्ञात दुर कराते, ज्ञान वान बनाओ।

समानता की भाव, फैलाए अपने गाव।
घर परिवार अपने, ममता की बने छाव।
बच्चे माता पिता के, कहना तो मान जाओ।
सेवा सतकार की, तुम सब काम कर जाओ।

अरमान अभिषेक बच्चे, बन जाते तुम सच्चे।
आगे काम कर अच्छे, पढाई लिखाई कर जाओ।
अपने जिंदगी की सफर, आगे तुम बढाओ।
अपने करके नाम रोशन, दुनिया को दिखलाओ।

सागर के चाल बन कर, उनके राह पकड़ आओ।
मन आत्मा लगा कर, अपने काम कराओ।
नाम बदनाम ना करना, बात कलम में गढो।
संसकृति संसकार पढ़, हमारे विचार अपनाओ।

– रामसागर कश्यप

श्री भागीरथ सिन्हा

दिल्ली

स्वपरिचय

- पिता का नाम : स्व. देवनारायण प्रसाद।
- माता जी का नाम : श्रीमती धनवंती देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (समाज शास्त्र)।
- पदनाम : पत्रकार।
- साहित्यिक अनुभव : विगत २१ वर्षों से लेखन।

प्रकाशित कृतियाँ

- लहरों से टकराया करता हूँ।
- भागीरथ मनका।
- दीप जला दो आँगन में।
- २०० से भी अधिक रचनाएँ विविध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान

- मातृभाषा उन्नयन संस्थान भारत द्वारा "**भाषा सारथी सम्मान** से सम्मानित
- अरूणाभा वेलफेयर सोसायटी, फरीदाबाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ **शब्द शिल्पी सम्मान** एवं **शारदा साधक सम्मान** से सम्मानित
- विस्तार पब्लिकेशंस नई दिल्ली द्वारा काव्य विस्तार साझा संग्रह में उत्तम लेखन हेतु **उत्कृष्ट कलमकार** पुरस्कार से सम्मानित
- कशिश काव्य मंच साहित्यिक संस्था रजि. द्वारा कवि सम्मेलन एवं पुस्तक लोकार्पण में उत्कृष्ट काव्य पाठ हेतु सम्मानित।
- राष्ट्रीय काव्य संगम महोत्सव , हिंदू जागृति मंच संभल उत्तर प्रदेश द्वारा **काव्य पुरोधा** अलंकरण से विभूषित ।

सत्यापन

मैं यह घोषणा करता हूँ कि यहाँ विदित जानकारी पूर्णतः सत्य है तथा प्रेषित रचनाएँ मेरे द्वारा स्वयं सृजित एवं मौलिक कृतियाँ है। उक्त रचनाओं को मैं स्वेच्छा से इस संकलन में प्रेषित करता हूँ। इन रचनाओं पर सदैव मेरा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा।

जीत को हार बना लिया

प्यार के सिलसिले में, जो दर्द तूने दिया
मैंने महफ़िल में उसको बुलंद कर दिया।।

दर्द सहने की हद जब, बेपनाह हो गई,
लगाया दिल से उसे और वह जां हो गई।।

उस पीडा को ख़ुशी मान, दुनिया में बाँट दिया,
मेरी यादों ने उन्हें वक्त-ए-गुलाब बना दिया।।

सीने से चिपका कर, यादों को किताब बना दिया,
ताकि समय दर समय पलट कर, यादों को ताजा कर सकूँ।।

महका गई मेरी दुनिया, जीत को मैं हार बना लिया,
अब कोई शिकवा नहीं तुमसे, दर्द को आवाज़ बना लिया।।

– भागीरथ सिन्हा

इश्क़

मेरे इश्क की कभी
परवाह कर लिया करो,
नादान हूँ तेरे इश्क में,
मुझे संभाल लिया करो।

तेरी राहों में बिछा हूँ,
ये दिल तेरा ही आशियाना है,
मेरी धड़कनों को भी कभी
अजमा लिया करो।

तेरी इश्क में पागल हो गया हूँ,
मेरी तरफ भी देख लिया करो,
जीना है संग-संग, ये ख्वाहिश है,
पर बेवफाई की जिद ना किया करो।

तेरे बिना ये दुनिया
अधूरी सी लगती है,
थोड़ा वक्त मेरे लिए भी
निकाल लिया करो।

– भागीरथ सिन्हा

धन्यवाद

Mahakaal Ki Kripa Se
Sab Kaam Ho Raha Hai

आगामी साझा संकलन

सहभागिता शुल्क : ₹ ५००/–

रचनाकार को प्राप्त लाभ :

१. पुस्तक की मूल प्रति एवं ईबुक।
२. प्रकाशन प्रमाण पत्र (मुद्रित एवं लैमिनेटेड)।
३. पदक।
४.मूल जीएसटी बिल।
५.आभार पत्र।

जुड़ने के लिए स्कैन करें

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी, फुसरो
बोकारो (झारखंड) –८२५१०२
www.sahityasangambooks.in

ISBN: 978-8-19732-635-6
9 788197 326356

मूल्य : ₹ ५००/–